अंकों की कहानी

डॉ० जय नारायण कौशिक



साहित्य सहकार
दिल्ली-110 051

मूल्य : पैंतीस रुपये

प्रथम संस्करण 1990

प्रकाशक

साहित्य सहकार
ई 10/4 कृष्णनगर,
दिल्ली 110051

आवरण : [illegible]

मुद्रक : [illegible] मुद्रणालय दिल्ली 32

ANKON KE KAHANI [illegible] Dr. Jai Narain Kaushik
Rs. 35.00

विषय-सूची

अक

मैं सख्याजगत का चिह्न अक हूँ। मेरा अर्थ ही चिह्न है। जिस समय मैं टेढा-मेढा रूप बन कर पहली बार लिखा गया तो मैं अक का चिह्न कहलाया। मेरे टेढे-मेढे, आडे-तिरछे कई रूप बने। एक रेखा (। या –) एक का चिह्न बनी। दो रेखाएँ (।। या =) दो का चिह्न और तीन रेखाएँ (।।। या ≡) तीन का चिह्न मानी गई। इसी तरह चार, पाँच, छ, सात, आठ और नौ एक-एक रेखा बढा कर लिखे जाने लगे। कुछ मनुष्य केवल एक-एक बिन्दी लगा कर मुझे लिखने लगे।

धीरे-धीरे मेरे रूप का विकास हुआ। जिस रूप मे आज मैं लिखा जाता हूँ उस तक पहुँचने की यात्रा हजारो वर्ष लम्बी है।

भारत की सभी पद्रह भाषाओ मे लिखे जाने वाले अको का विकास ब्राह्मी लिपि से माना जाता है। हमारा इतिहास हजारो वर्ष पुराना है। कुछ विदेशी लिपि के अको का विकास भी ब्राह्मी से माना गया है।

नमूने के तौर पर हमारा रूप आगे चित्रो मे निहारिए। देश की राष्ट्रीय भाषाओ मे मेरे नाम का उच्चारण भी सीखिए।

एक बात यह हे कि जिन्हे लोग भूलकर अग्रेज़ी अक

(1, 2, 3, 4, 5 आदि) कहते है ये वास्तव मे भारतीय मूल के ही है। आजकल इनका नाम भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अक पड गया है।

अक लिखने की विद्या का विकास सबसे पहले भारत मे ही हुआ। लेखन की शिक्षा धूलि पर अक बनाकर दी जाती थी। अक लेखन को धूलिकर्म कहते थे। कागज़, स्याही और लेखनी के अभाव मे पाटी या तख्ती पर धूलि बिछा कर अक लिखे जाते थे।

जिस समय भारत से अक-विद्या अरब देशो मे पहुँची तो उन्होने इसका नाम 'हिन्दसा' दिया और गणित-विद्या को 'हिसाबुल हिन्द' कहा गया। यही अक-विद्या अरब देशो से यूरोप मे पहुँची। अब तो मेरा रूप अन्तर्राष्ट्रीय हो गया।

देश विदेश की अंक-पद्धतियों के कुछ नमूने

अन्तर्राष्ट्रीय	देवनागरी	अरबी	ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
	१	١	—	|			𒁹
2	२	٢	=	||	I	•	𒈫
3	३	٣	≡	|||	II	••	𒐈
4	४	٤	ч	||||	III/IV	•••	𒐉
5	५	٥	h	|||||	V	—	𒐊
6	६	٦	ℓ	T	VI	• —	𒐋
7	७	٧	ᄀ	π	VII	•• —	𒑂
8	८	٨	ᓇ	Ⲡ	VIII	••• —	𒑄
9	९	٩	3	Ⲡ|	VIIII/IX	—	𒑆
10	१०	١٠	α	—	X	=	𒌋
20	२०	٢٠	8	=	XX	[illegible]	𒎙
30	३०	٣٠		≡	XXX		𒌍
40	४०	٤٠		≣	XXXX		𒐏
50	५०	٥٠		𝍭	XXXXX/L		𒐐
60	६०	٦٠		⊥			𒁹
70	७०	٧٠		⊥ =			𒁹𒌋
80	८०	٨٠		⊥ ≡			𒁹𒎙
90	९०	٩٠		⊥ ≣			𒁹𒌍
100	१००	١٠٠	m		C		𒁹𒐏

अक गणना

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। जिस समय मनुष्य जगलो मे नदी किनारे घूमता था तो उसे गिनती की कोई आवश्यकता नही थी। गिनने की आवश्यकता सग्रह करने की आवश्यकता के साथ हुई। अपनी भेड-बकरियो या गाय-भैमो की गिनती का उसने मरल उपाय निकाला। हर पशु का एक तिनका या खूंटा रखा जाता। जितने तिनके या खूंटे बच जाते उससे वह अनुमान लगाता कि उमके कितने पशु जगल से नही लौटे उसने तिनको के स्थान पर छोटे ककडो से भी पशुओ की गिनती का ताल-मेल बैठाया।

एक से दो तक की गिनती गिनने मे काफी समय लगा। शरीर मे दो हाथ, दो पैर, दो आँखे और दो कान है। इन्ही के साथ ताल-मेल बैठाकर दो तक की गिनती आरभ हुई।

गिनती गिनने की कहानी कुछ और आगे बढी। एक हाथ मे पाँच उँगलियाँ होती हैं। पाँच तक की गिनती का नाम एक पजा दिया गया। पाँच-पाँच की ढेरी बना कर गिनती की कहानी और आगे बढी।

दोनो हाथो मे दस उँगलियाँ होती हैं। पजे की गिनती दो पजो तक पहुँची। इस प्रकार 6, 7, 8, 9 और 10 तक गिनती की कहानी आगे बढी।

नागरी अक

९वीं शती	११वीं शती	१२वीं शती पाल पोथियों से	१२वीं से १६वीं शती तक जैन पोथियों से	शारदा	टाकरी	कैथी	मैथिली	हिन्दी
[illegible]	१	१	१	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	१
२	[illegible]	२	2	३	३	२	२	२
३	३	३	३	३	[illegible]	३	३	३
४	४	४	९	[illegible]	४	[illegible]	५	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६
११	३	३	[illegible]	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]		

मनुष्य का ध्यान उँगली के पोरो की ओर भी गया। हर उँगली मे तीन पोरे होते हैं। चार उँगलियो के 12 पोरे हुए। बहुत से बच्चे जोड सीखते समय आज भी पोरो की सहायता लेते ह। बारह की सख्या का नाम दर्जन पडा। आज भी केले, सन्तरे आदि फलो की गिनती दर्जन के हिसाब से की जाती है।

दस, बारह से होता हुआ सख्या का इतिहास 20 तक पहुँचा। मनुष्य ने दोनो पैरो की उँगलियाँ गिन कर हाथ की उँगलियो मे जोडी। इस तरह पहले यह सख्या 15 तथा बाद मे 20 तक पहुँची। बीस की गिनती को बीसा तथा कोडी नाम दिया गया। एक बीसा, दो बीसे, तीन बीसे, चार बोसे आदि से गिनती की कहानी साठ तथा अस्सी तक पहुँची। साठ की सख्या का बहुत महत्त्व है। एक घटे मे साठ मिनट होते हे। एक मिनट मे साठ सैकिड होते हे।

सौ की ढेरी का नाम सैकडा पडा। क्रिकेट के खेल मे शतक या सेन्चुरी का बहुत महत्त्व है। सौ दौडे या रन कहने के स्थान पर शतक शब्द कहना आसान है।

आवश्यकता के अनुसार सौ-सौ की ढेरियाँ बना कर गिनने का कार्य आगे बढा। एक सौ, दो सौ, तीन सौ आदि से बढ कर गिनती गिनने की कहानी नौ सौ तक पहुँची। दस सौ की ढेरियो को एक हजार या सहस्र नाम दिया गया। इस प्रकार दस हजार तक की गिनती गिनी जाने लगी। सौ हजार को एक लाख नाम दिया गया। सौ लाख एक करोड कहलाए। इसी प्रकार अरब, खरब, नील, पद्म आदि की सख्याएँ बनी। जब कोई वस्तु मनुष्य की गिनती से बाहर

हो जाती है तो वह उसे असख्य कह कर अपना काम चलाता है।

देखा आपने, एक की सख्या किस प्रकार बढकर असख्य तक पहुँची। मनुष्य को एक की सख्या को भी कई छोटे भागो मे बाँटने की आवश्यकता पडी। एक रोटी को कभी दो, कभी तीन और कभी चार टुकडो मे बाँटा गया। एक वस्तु को दो भागो मे बाँटा गया तो उसे आधा या अर्ध नाम दिया गया। जिस समय यही भाग तीन, चार, पाँच आदि के साथ जुडा तो यह 'सार्ध' कहलाया यानी आधे के सहित। यही 'सार्ध' बाद मे 'साढे' बन गया जैसे—साढे तीन, साढे चार आदि।

एक वस्तु के चौथाई भाग को पाद या पाई कहा गया। जिस समय किसी सख्या के साथ चौथाई भाग जोडा जाता है तो वह सख्या 'सपाद' अर्थात् पाई समेत कही जाती है। 'सपाद' को ही बाद मे हम 'सवा' कहने लगे। सवा दो, सवा-तीन, सवा चार आदि का अर्थ है कि दो, तीन, चार आदि के साथ चौथाई भाग भी जुडा हुआ है।

अब एक वस्तु के चार भागो मे से तीन भागो पर विचार करें। तीन चौथाई का अर्थ है कि पूरी वस्तु से एक पाद या अश न्यून या कम। यदि किसी वस्तु मे एक अश न्यून है तो उसे 'पाद ऊन' या 'पादोन' कहा जाने लगा। यही अश पाद-ऊन, पौन या पौना कहलाया। पौने एक, पौने दो, पौने-तीन, पौने चार आदि का अर्थ हुआ एक, दो, तीन, चार आदि सख्याओ मे चौथाई भाग या अश की कमी।

मनुष्य हर काम मे सरलता की खोज करता रहता

हे। 19 29, 39, 49, 59, 69, 79, का उच्चारण करके देखिए। इनको क्रमश उन्नीस, उनत्तीस, उनतालीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर और उनासी कहा जाता है। इन सब गिनतियो के आरभ मे 'उन' शब्द जुडा हे। 'उन' का अर्थ हे न्यून या कम। यानी बीस, तीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर ओर अस्सी की सख्याओ से एक कम। अगर आप 'उन' का अर्थ समझ ले तो इन सख्याओ को कभी भी अशुद्ध नही लिखेगे। यहाँ दस नौ, बीस नौ, तीस नौ आदि न कह कर बीस, तीस, चालीस, आदि की पूरी सख्या से एक कम (उन) कह कर काम चलाया है।

पीछे चित्र मे रोमन लिपि के अको को देखिए। हर सख्या की गिनती मे दाई ओर एक जोड दिया जाता है। जैसे I, II, III, IIII। पॉच की सख्या पूरी होने पर पजे का निशान बना दिया जाता है। जैसे—V। फिर आठ तक पॉच अक के दाईं ओर एक-एक की सख्या खीच दी जाती है। जैसे VI, VII, VIII। अब जरा दस, बीस, तीस ओर चालीस को देखिए। इन्हे दस-दस की ढेरियो के चिह्न से दर्शाया गया है। जैसे—X, XX, XXX,।

इस लिपि मे भी नौ, उन्नीस, उनत्तीस आदि को लिखने के लिए पूरी सख्या के बाईं ओर एक कम का सकेत दिया जाता है। जैसे—IX, IXX, IXXX आदि।

दस से ऊपर की गिनती मे देवनागरी लिपि मे 11 से 18 तक की गिनती 10 को आधार मान कर बोली जाती है। जैसे—दस एक ग्यारह, दस दो बारह, दस तीन तेरह आदि। 19 की सख्या एक कम बीस (एकोनविंशति) बोली

जाती है ।

उच्चारण की सुगमता के लिए दस शब्द कही 'रह' तो कही 'दह' बोला जाता है। जैसे—ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पद्रह आदि अको मे एक दस, दो (द्वि) दस, तीन (त्रि) रह, चार (चतुर्) दह, पच (पच) रह आदि अक ।

अग्रेजी अको के उच्चारण मे भी टुवेल्व, थरटीन, फोरटीन, फिफटीन आदि शब्दो मे टू, थ्री, फोर, फाइव आदि अक पहले बोले गए हे और Ten या Teen अक बाद मे बोला गया है ।

कहानी काफी लबी होती जा रही है । कुछ अको की छानबीन आप अपनी ओर से भी करे। अक गणना की कहानी हम यही समाप्त करते है ।

भाषा	देश विदेश की विभिन्न लिपियों के साथ प्रयुक्त होने वाले ब्राह्मी से विकसित आधुनिक अंक-संकेत									
भारतीय अंतर्राष्ट्रीय	1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
देवनागरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
गुजराती	૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭	૮	૯	૦
बंगला	১	২	৩	৪	৫	৬	৭	৮	৯	০
गुरुमुखी	੧	੨	੩	੪	੫	੬	੭	੮	੯	੦
तेलुगु	౧	౨	౩	౪	౫	౬	౭	౮	౯	౦
कन्नड़	೧	೨	೩	೪	೫	೬	೭	೮	೯	೦
मलयालम	൧	൨	൩	൪	൫	൬	൭	൮	൯	൦
तमिल	௧	௨	௩	௪	௫	௬	௭	௮	௯	௰
उड़िया	୧	୨	୩	୪	୫	୬	୭	୮	୯	୦
तिब्बती	༡	༢	༣	༤	༥	༦	༧	༨	༩	༠
मंगोली	᠑	᠒	᠓	᠔	᠕	᠖	᠗	᠘	᠙	᠐
सिंहली	෧	෨	෩	෪	෫	෬	෭	෮	෯	෦
बर्मी	၁	၂	၃	၄	၅	၆	၇	၈	၉	၀
स्यामी	๑	๒	๓	๔	๕	๖	๗	๘	๙	๐
ख्मेर	១	២	៣	៤	៥	៦	៧	៨	៩	០
जावी	꧑	꧒	꧓	꧔	꧕	꧖	꧗	꧘	꧙	꧐

एक

मैं सख्या जगत का जनक 'एक' हूँ। मेरा इतिहास सृष्टि के समान प्राचीन है। मेरा अपना एक विशाल परिवार है। इकाई से लाख, अरब, खरब, पद्म, शख, आदि मेरा एक-एक अश मिल कर बने हैं। मैंने मनुष्य को एकता का पाठ पढाया है। एक-एक दो और ग्यारह होने का सिद्धान्त उसने मुझ से ही सीखा है। ज्योतिष, वैद्यक, गणित, राजनीति, सामुद्रिक, सगीत, कोष, उपवन विज्ञान, न्याय, धर्म, इतिहास, व्याकरण, वाणिज्य आदि के विभिन्न क्षेत्रो मे प्रयोग होने वाले अनेक शब्दो की रचना मेरी सहायता से हुई है। मैं 'एकमुख' होकर अर्थात् एक लक्ष्य की ओर प्रवृत्त होकर अपनी कहानी सुनाता हूँ।

साहित्यकारो ने अपनी लेखनी को प्रभावशाली बनाने और अपनी विचारधारा मे गति और प्रवाह भरने के लिए मेरा प्रयोग लोकोक्तियो और मुहावरो के रूप मे किया। मेरे आश्रय से उन्होंने 'एक के दस-दस' किए हे। कथाओ को रुचिकर बनाने के लिए 'एक की चार' लगा कर कहा है। मेरा आश्रय लेने वाले सभी साहित्यकार 'एक-तवे की रोटी, क्या मोटी क्या छोटी' तो नहीं हैं किन्तु लेखक होने के नाते 'एक थैली के चट्टे-बट्टे' अवश्य है। मेरे आश्रय से उन्होंने 'एक पथ दो काज' की सिद्धि की, प्रसिद्धि मिली और भाषा भी प्रभावशाली बनी। मैं

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	एक
पंजाबी	एक/इक्क
उर्दू	एक/यक
कश्मीरी	अख
सिंधी	हिकु
मराठी	एक
गुजराती	एक
बंगला	एक/अक्
असमिया	एक/अक्
उड़िया	एको
तेलुगु	ओकटि
तमिल	ओण्णु/ओनस
मलयालम	ओन्नु
कन्नड	ओंदु
संस्कृत	एक
अंग्रेजी	वन

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
—	।	।	•	▼

हर प्रकार से आपका सेवक हूँ। आपकी सेवा मे 'एक पाँव पर खडा रह सकता हूँ'। मै 'एक लाठी से सबको हाँकने' का पक्षपाती नही हूँ। जो ऐसा करते है उन्हे 'एक की दस सुननी' पडती है। यदि आप मेरे लिए 'एक चने की दाल' बनना चाहे, या 'एक जान दो कालिब रहना' चाहे तो मेरी ओर मित्रता का हाथ बढाइए। मैं बहुत शान्तिप्रिय हूँ। मेरा न तो 'एक पॉव भीतर और एक पॉव बाहर' रहता है और न ही सदा 'एक पॉव रकाब मे रहता है'। यही कारण है कि मेरे साथ 'एक जान हजार गम' वाली बात कभी नही घटती। इसका यह अर्थ मत लगाइए कि मैं इस सिद्धात का पक्षपाती हूँ कि 'एक चना भाड नही फोड सकता'। वह अगर भाड नही फोड सकता तो भूनने वाले की एक आँख को काना कर सकता है।

मैं अपनी शक्ति से भली प्रकार अवगत हूँ। अपनी शक्ति के कारण मैं 'एक न शुद, दो शुद' अर्थात् एक विपत्ति के रहते दूसरी विपत्ति के आ पडने वाली घटना से दूर हूँ। मैंने 'एक के दो-दो करना' अर्थात् दिन काटना नही सीखा। मैं प्रसन्नचित्त रहता हूँ। मैं अभिमानरहित हूँ फिर भी 'एक की दवा दो' वाली बात मे विश्वास रखता हूँ। मैं जिस दिन से 'एक से दो हुआ हूँ' तभी से मैं सबको 'एक आँख से देखता हूँ'। मेरा विशाल परिवार होते हुए भी 'एक अनार सौ बीमार' वाले कलक से बचा हूँ। अपने परिवार को कष्ट मे रखने वाले प्राणी मुझे 'एक आँख नही भाते'। इन्ही विशेषताओ के कारण मैंने अक जगत को 'एक हत्था कर दिया है' अर्थात् अपना एकाधिकार जमा लिया है।

धर्मगुरुओ की मुझ पर विशेष कृपा रही है। वे मेरा प्रयोग बडे गर्व से करते हैं। उन्होने मेरा सम्वन्ध अनेक देवी-देवताओ, यज्ञ-हवन आदि के साथ जोड दिया है। 'एक गव्य' स्वय साक्षात् एकाक्षर परब्रह्म हे। 'एक दत', 'एक दष्ट्र', 'एक रदन', स्वय गणेशजी हे। 'एक-नेत्र', 'एक-लिग', 'एक-नायक', 'एक दृक्', 'एक-नयन', 'एक नेत्रक', 'एक पत्नी व्रत', 'एक-पाद', 'एक-रस', 'एक-वर्ण,' स्वय शिव है। 'एक चारिणो', 'एक चित्त', 'एक-निष्ठ' स्वय माता पार्वती है। 'एक पाटला', 'एक पर्णा' दुर्गा के रूप हैं। दानी कुवेर ने मुझसे अपना सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अपना नाम 'एक कुडल', 'एक पिगल' रखवाया। वलराम ओर शेप भी 'एक कुडल' नाम से प्रसिद्ध हुए। 'एक वासा' या 'एक वासस्' जैनो का एक भेद होने के कारण मेरा सम्वन्ध जैन धर्म से भी है।

'एकाह' और 'एक रात्र' एक रात मे पूर्ण होने वाले यज्ञ हे। अत मेरा निवास यज्ञ-हवन आदि कर्मो मे भी हुआ। 'एकेश्वरवादी' अपने मत 'ईश्वर जगत का सर्जन-नियमन करने वाली शक्ति एक ही ह—के समर्थन के लिए मेरी शरण मे आए। यद्यपि आप मेरे 'एकज', 'एकजा' या 'एक तीर्थी' नही हैं तथापि आप 'एक मत' होकर मेरे महत्त्व को एकाकी होकर समझ सकते हैं।

अक गणित का तो मानो मैं प्राण हूँ। छोटी से छोटी इकाई मे मेरा सूक्ष्म रूप और पद्म, नील आदि मे मेरा ही विराट् रूप जानो। पहले मैं 'एक-दम था'। शून्य ने मेरा वरण किया। तव से मेरा परिवार वढता ही गया। 'एका-

दश', 'एकविंशति', 'एकषष्टि, आदि आदि मेरे साथ अपना नाम अपने पिता के समान जोडते है। चौथाई, आधा, पौना आदि मेरे अश हैं। मेरे अकजाल मे वडे-वडे गणितज्ञ उलझ जाते हैं। मुझे भली प्रकार समझने के लिए गणितज्ञो ने मुझे नियमो-उपनियमो मे बाँधा है। छोटी-वडी सभी गणित की पुस्तको मे मेरा स्थान सुरक्षित है।

वैद्यो को आपने 'एक कुष्ठ', 'एक पत्रिका', 'एक मूला' (अलसी, शालपर्णी) आदि शब्दो का प्रयोग करते सुना होगा। औषधियो की करामात से वे मनुष्य को 'एक पाठी, 'एक घर' बना सकते है।

सगीतज्ञो ने मेरा उपयोग 'एक तान' होकर किया है। 'एक तारा', 'एक ताल' (जिसमे ताल-सुर का पूरा मेल हो), 'एक ताला' (सगीत का एक ताल), 'एक तालिका' (एक मिश्र राग) आदि मे मैं विद्यमान हूँ। डमरू को तो 'एक-सून' कहा गया है।

अब व्याकरण तथा पिंगल क्षेत्र मे अपने व्यापार की चर्चा करता हूँ। 'एक वचन', 'एक वचनान्त' मेरी सहायता से वने है। 'एक शेष' (द्वन्द्व समास का एक भेद जिसमे दो मे से एक ही पद रह जाता है) मुझे प्रिय है। 'एक मात्रिक', 'एक पदी', 'एक श्रुति' (वेद पाठ का वह क्रम जिसमे उदात्त, अनुदात्त आदि का विचार नही किया जाता) आदि मेरे ही रूप है।

राजनीति मे मेरे कुछ शब्दो का 'एकच्छत्र' राज्य है। 'एक तत्र', 'एक शासन प्रणाली' 'एक सत्ताक', 'एक हत्या' आदि शब्दो की चर्चा तो आप प्रतिदिन सुनते ही रहते होगे।

अपने विषय मे अनेक बाते बताते समय यदि न्याय-क्षेत्र को छोड दिया जाए तो विषय 'एक तरफा' रह जाएगा। 'एक राय', 'एक पक्षीय', 'एक रुखा' आदि शब्द न्यायालयो मे नित्यप्रति सुने जा सकते है। प्राचीन काल मे 'एक हस्त-पाद वध', 'एक पाद वध' आदि दड 'एक राय' होकर दिए जाते थे। न्यायाधीश बहुत से निर्णय 'एक साक्षिक' पर ही निपटा देते थे।

आइए, इतिहास के सूत्रो मे भी आप मेरे साथ बँधिए। 'एकलव्य' द्रोणाचार्य का निषाद शिष्य था जिसने उसकी मूर्ति को गुरु मानकर बाण-विद्या सीखी और गुरु दक्षिणा मे दाहिने हाथ का अँगूठा काट कर दे दिया। 'एक-लिंग' मेवाड के राजवशो के कुल-देव रहे है। महाभारत मे वर्णित 'एक चक्रा' नगरी मे मेरा वास रहा है।

विज्ञान जगत को भी मेरा लघु योगदान है। 'एक कोषी' (जिस प्राणी का शरीर एक ही कोष का बना हो), 'एक धर्मी', 'एकस्थ', 'एक पुष्पी', 'एक वर्ण', 'एकेन्द्रीय' आदि शब्द विज्ञान जगत मे प्रचलित है। 'एक सूत्र', 'एक मुख', 'एक दरा' आदि शब्दो को स्थापत्य-कला तथा 'एक देह' (बुधग्रह) शब्द ज्योतिष शास्त्र मे काम मे लाए जाते हैं।

मल्लयुद्ध करने वालो ने भी अपने दाँव-पेचो का सबध मुझ से जोडा है। 'एक लगा', 'एक दस्ती', 'एक हत्थी', 'एक पक्ष' आदि शब्द कुश्ती के दाँव-पेचो के हैं।

पशु-पक्षियो, लता-वृक्षो मे भी मेरा विस्तार है। एक पुनक (कौडिल्ला पक्षी जो मछली खाता है) मे मेरे प्राण

हैं। 'एक दृक्' (कौवा) भी मुझ मे चेष्टा है। 'एक चर' (गेंडा), एक दता (हाथी) की मैं सवारी करता हूं। 'एक लेख' (सुन्दर फूल) मुझे अतिप्रिय है। जल क्रीडा के लिए मैं 'एक-गाछी' (नाव) मे विहार करता हूँ।

अब आप मेरे 'एक नोत्रे' (एक खम्बे पर खडा किया जाने वाला खेमा) मे बैठकर विविध शब्दो पर विचारिए। 'एक चक्री', 'एक जन्मा' (राजा, शूद्र), 'एक जात', 'एक टक', 'एक जल', 'एक टिग्री', 'एक पदी' (पगडडी) आदि शब्दो से मेरा अनुराग है। 'एक विक्रय', 'एक मोला' व्यापारी पर मेरी विशेष कृपा रहती है।

यद्यपि अपनी माता के मैं 'एक मूनु' हू तथापि 'एक हायन' (वर्ष) मे मैंने उसे निर्भय कर दिया था। मेरी माँ ने मुझे 'एक कृष्ट' (एक बार जोता हुआ) खेत से उत्पन्न अन्न खिलाया था।

भाषा वैज्ञानिको ने मेरी शाब्दिक उत्पत्ति के विषय मे अनेक प्रमाण उपस्थित किए हैं। सख्यावाचक विशेषणो के विकास की चर्चा करते हुए विद्वान् मान लेते हैं कि वैदिक-पद-बहुला भाषा से मैं सस्कृत मे आया। उस समय मुझे 'एक' कहा जाता था। प्राकृत भाषा मे मैं 'एक्क' कहलाया। हिन्दी का 'एक' इस 'एक्क' से बना। उस समय मुझे 'एगा' भी कहते थे। 'ग्यारह' मे मेरा 'एगा' का रूप सुरक्षित है। सयुक्त सख्याओ मे 'ए' का 'इ' हो गया है यथा—इक्कीस, इकत्तीस आदि।

मेरे इतिहास के ज्ञान से आप सृष्टि के इतिहास के विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकते है। मेरी 'एक' ध्वनि का

विभिन्न भाषाओ मे थोडे स्वर-व्यजन भेद के साथ उच्चारण इस बात का प्रमाण है कि मानव परिवार पहले एक स्थान विशेष से देश-देशान्तरो मे फैला है। शायद आगल भाषा-भाषी कहे कि हमारे 'वन' का आप से क्या सम्बन्ध। इसका उत्तर भी मेरे पास है। देश-भेद और काल-भेद के भारी अन्तर के कारण अनेक शब्दो मे भारी परिवर्तन आ गया। शब्दो के पर्यायवाची बने। ताश के खेल मे 'एस' (Ace) शब्द का प्रयोग अब भी होता है। 'एस' का अर्थ 'इक्का' या एक होता है। 'एस' मे 'सी' की ध्वनि 'क' की ध्वनि के रूप मे भी उच्चरित होती है यथा—'काउ' (Cow)। अत 'स' की ध्वनि को 'क' बोले तो एस (Ace) 'एक' के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं।

दो

'द्विदेह' (गणेश), 'द्विमातृ' (गणेश) को नमस्कार कर, 'द्विसहस्राक्ष' (शेष) शायी, 'द्विज वाहन' (विष्णु) का ध्यान धर, 'द्वीपासनधारी, (व्याघ्र के आसन वाले—शिव) को स्मरण कर मैं 'द्वि' अथवा 'दो' नामधारी अक अपनी जीवन कहानी को दोनो हाथ बाँध कर आपको सुनाता हूँ। मैंने अपनी यह जीवन कहानी 'द्विजो' से 'द्विगुणित' रुचि के साथ 'दोपहर' मे 'दो घडी' के लिए बैठ कर सुनी थी।

मेरे जन्म के समय मेरी माता ने प्रसन्न होकर विप्रो को 'द्विहायनी' (दो वर्ष की आयु की गाय) दान की। इस प्रकार उसने अपनी 'द्वि-हृदया' (गर्भिणी स्त्री) प्रतिज्ञा पूर्ण की। 'द्विजप्रपा' (पक्षियो आदि को पानी पिलाने के लिए बना हुआ गड्ढा) का प्रबन्ध किया गया। पिता ने 'द्विजायनी' (यज्ञोपवीत) धारण कर 'द्वि-रात्र' (दो रात मे पूरा होने वाला यज्ञ) आरभ किया।। यज्ञ वेदी 'द्विजप्रिया' (सोमलता) से सुगधित हुई। 'द्विजराज' ने ऋचाएँ पढी।

मैं 'एक' का 'द्वितीय' (पुत्र जिसके रूप मे आत्मा ही दूसरी बार जन्म लेती है) हूँ। मेरा नामकरण सस्कार 'द्विवेदी' (दुबे) 'द्विजो' ने किया। 'द्वि', 'दो', 'दोऊ', 'दोउ', 'दोय', 'दुई', 'दू' आदि मेरे अनेक नाम ह। 'द्विशोर्पा' (अग्नी) के समक्ष मुझे गुरुमत्र मिला। मेरा जीवन 'द्विभूम'

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	दो
पंजाबी	दो
उर्दू	दो
कश्मीरी	जु
सिंधी	ब
मराठी	दोन
गुजराती	बे
बंगला	दुई
असमिया	दुई/डुई
उड़िया	दुई
तेलुगु	रेण्डु
तमिल	रेण्डु/इरण्डु
मलयालम	रण्टु/रण्डु
कन्नड	रड्डु/युरडु
संस्कृत	द्वि
अंग्रेज़ी	टू

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
=	॥	॥	••	YY

अर्थात् 'दो तल्ला' (दो मञ्जिला), द्विवज्रक (16 कोनो का भवन) भवनो मे बीतना शुरू हुआ।

ननसाल से मुझे 'दो पलका' (दो नगीनो वाला), 'दो पल्ली' आदि आभूषण मिले। शीत से बचाने के लिए मुझे 'दो तही' और 'दो तारा' वस्त्र पहनने को मिले।

बचपन से ही मुझे पशु-पक्षियो मे रुचि हे। 'द्विककुद' (ऊँट), 'द्विप', 'द्विपायी'-'द्विरद-द्विहा' (हाथी) पर मैने सवारी की है। 'द्विरेत' (खच्चर), 'द्विदाम्नी' (दो रस्सियो मे बाँध कर रखने योग्य दुष्ट गाय) से मुझे भय लगता हे। 'द्विक-कार' (कौवा, कोक), 'द्विरेक' (भ्रमर), 'द्विजिह्व' आदि 'द्विजो' (पक्षी) के खिलौनो से मै खेला हूँ।

'द्विसीत्य' (दो बार हल चलाया गया) क्षेत्र की 'दोमट भूमि,' से उत्पन्न 'दो फसली' भूमि की 'द्विदल' दाले मुझे भाती है। इस प्रकार के अन्न ने मेरे स्वभाव पर अच्छा प्रभाव डाला ह। मैं कभी 'दोचित्ता' नही रहता। 'दो-चित्ती' (व्यग्रता) मेरे से कोसो दूर हे। 'दोगली' बाते मुझे नही भाती। मैं सदा 'दो टूक' बात करने मे विश्वास रखता हूँ। अत मैं हर 'द्विविधा' से दूर हूँ।

सगीत, पिंगलशास्त्र, व्याकरण आदि विषयो मे मेरी रुचि है। 'द्विगूढ' (एक प्रकार का गाना) तथा 'द्विपदी' (दो चरणो की गीति) मुझे प्रिय है। 'द्विरेफ' (जिसमे दो 'र' हो यथा-भ्रमर), 'द्वित्व' (दोहरा होने का भाव जैसे 'सूर्य्य' मे 'य' दो बार है), 'द्विबिन्दु' (विसर्ग), 'द्विकर्मक' (जिस वाक्य मे दो कर्म हो), 'द्विगु' (समास का एक उपभेद), 'द्विमात्र' (जिसमे दो मात्राएँ हो, दीघ), 'द्विवचन' आदि का

के अनेक रोग दूर होते है। 'दोजर्बी', 'दो नली' आदि वन्दूके तथा 'दोधारी' तलवारे उस काल मे वनने लगी थी।

मेरे शासनकाल मे धर्म का व्यापक प्रचार था। 'द्वैपायन' रचित महाभारत, पुराण आदि का पाठ होता था। 'द्विज-वन्धु' (कर्महीन ब्राह्मण) अल्प सख्या मे थे। 'द्वैतवाद', जिसके अनुसार जीव और ब्रह्म, भूत और चिच्छवित मे भेद माना जाता है, का भी प्रचार था। वेदान्तवादी द्वैत-वादी नही थे। 'द्विजानि' (जिसके दो स्त्रियाँ हो) कम थे। 'द्विनग्नक' (वह मनुष्य जिसकी सुन्नत हुई हो) मेरे राज्य मे नही थे। किसी को 'द्विपाद्य' (शास्त्रोक्त दड से दुगुना दड) नही दिया जाता था।

मै सबको दो आँखो से देखता हूँ अर्थात् समान दृष्टि से देखता हूँ। मेरा विश्वास है कि दो नावो पर पैर रखने वाला प्राणी सदा दु खी रहता है। अनेक वार दो नावो पर चढना 'दो सिर होना' (मौत को न्योता देना) ही है।

मुझे पूर्ण ज्ञान है। पूर्ण भाषा के ज्ञान के कारण मैं 'दो-भाषिया' का काम कर सकता हूँ।

मैं नित्य प्रति व्यायाम करता हूँ। मैं 'द्वन्दज' (वात, पित्त, कफ मे से किन्ही दो के विकार से उत्पन्न रोग) रोगो से रहित हूँ। नित्य दन्त मार्जन करता हूँ अत 'द्विज् व्रण' (दाँत का एक रोग) से पीडित नही होता। मेरे सारे शरीर पर आप को एक भी 'द्विव्रण' (घाव) का चिह्न नही मिलेगा।

एक काल मे पजाब की सतलुज, व्यास, रावी, चिनाव, झेहलम आदि नदियो के 'दो आवो' मे मेरा राज्य रहा है। उसी समय मैंने 'द्वितीयाश्रम' (गृहस्थाश्रम) मे प्रवेश किया था। मैंने अग्रेजो के समान 'दो अमली' राजनीति नही अपनाई। 'द्वैत' शासन प्रणाली (वह शासन प्रणाली जिसमे सत्ता दो वर्गो मे विभक्त हो) से मुझे घृणा है। मेरे राज्य मे 'द्विज्' (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिनका यज्ञोपवीत सस्कार दूसरे जन्म के समान माना जाता है) तथा 'द्विज-सेवक' (शूद्र) प्रसन्न थे। मेरा राज्य 'द्वैराज्य' (दो राजाओ मे विभक्त राज्य) नही था। वहाँ मेरा ही एकच्छ राज्य था। मेरा राज्य 'द्वैमातृक' (जहाँ नदी तथा वर्षा दोनो का जल खेती के काम आता हो) कहलाता था।

मेरे राज्य मे विज्ञान के अनेक अनुसधान हुए। 'द्विक्षार' (शोरा और सज्जी) और 'द्विधातु' (काँसा, पीतल आदि जिसमें दो धातुओ का मिश्रण रहता है) पर विशेष अनु-सधान हुए। मेरे शासन काल मे 'द्वयष्ठ' (तावा) के बरतनो का अधिक प्रयोग होता था। इन बरतनो से आँख और पेट

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	तीन
पंजाबी	तिन
उर्दू	तीन
कश्मीरी	त्रे
सिंधी	टे
मराठी	तीन
गुजराती	त्रण
बंगला	तिन
असमिया	तिनि/टिनि
उड़िया	तिनि
तेलुगु	मूडु
तमिल	मूणु/मुनरु
मलयालम	मुन्नु
कन्नड़	मुरू
संस्कृत	त्रि
अंग्रेजी	थ्री

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
≡	|||	|||	•••	▼▼▼

तीन

मैं दो की 'त्रिणीता' (पत्नी) से उत्पन्न 'तीन'-'त्रि' हूँ। 'त्रिधातु' (गणश) को नमस्कार कर मैं अपनी आत्मकथा आप से निवेदन करता हूँ। 'त्रिचक्षु'-'त्रिजट'-'त्रिधर्मा', 'त्रिघ्न', 'त्रिदहन', 'त्रिहर', 'त्रिगुरु' (शिव) की कृपा, 'त्रिकुकद'-'त्रिपुगव' 'त्रिनाम-त्रिपृष्ठ' (विष्णु) के अनुराग और माता 'त्रिगुणा'-त्रिपुरसुन्दरी (दुर्गा) के स्नेह के कारण मै 'त्रिजग' (आकाश, पाताल, भूमि) मे व्याप्त हूँ। 'त्रिगुण' (धर्म, अर्थ, काम) प्राप्ति मेरा लक्ष्य है।

मेरे जन्म के समय 'त्रिगुणी' (बेल का पेड) पर 'त्रिगर्ता' (एक प्रकार का झीगुर) 'त्रिघनी' (एक रागिनी) गा रहा था। 'त्रिदिनसप्तक' (वह तिथि जिसका भोग तीन दिनो मे समाप्त होता है) तिथि मे मेरा जन्म हुआ। मनुष्यो की एक टोली त्रिगूढक (स्त्रियो के वेश मे पुरुषो का एक नृत्य) नृत्य कर रही थी। अश्विनी कुमार 'त्रिचक्र' (अश्विनी कुमार का रथ) पर बैठे मुझे आशीर्वाद दे रहे थे। 'त्रिदडी' सन्यासी (वाणी, मन और शरीर को वश मे करने वाले सन्यासी) 'त्रिदड' (वह दड जिसे कुटिचक सन्यासी जो शिखा सूत्र का त्याग नही करते और अपने कुटुब-कुटुबियो को छोड कर दूसरो के यहा भिक्षा नही करते, धारण करते ह, वह बांस के तीन दडो को

वेदो का ज्ञाता) ब्राह्मणो ने 'त्रिपादिका' (गोधापदी लता) को आसन बना कर वेदो पर 'त्रिपाण' (तीन वार भिगोया हुआ सूत) पूरा। 'त्रिवेणी' की धार पर 'त्रिपिंड' (पिता, पितामह, और प्रपितामह को दिए गए तीन पिंड) दिए गए। ये सभी पडित 'त्रिपुड' (भस्म अथवा चन्दनादि की तीन आडी या अर्ध चन्द्राकार रेखाएँ) धारण किए हुए थे।

मुझे त्रिफले की घुट्टी पिलाई गई। तदनन्तर त्रिरेख (शख) मे त्रिमधु (दूध, चीनी और मधु) का पान कराया गया। 'त्रिमधु' मे 'त्रिमार्गा' जल (गगा जल) मिला हुआ था। मेरी माता ने 'त्रिविनत' (देवता, ब्राह्मण और गुरु के प्रति श्रद्धालु) होकर मेरी 'त्रिवली' (पेट पर पडने वाले तीन वल) का चुम्बन किया। 'त्रिभग मुद्रा' मे त्रियामा (यमुना) के तट पर चित्रित श्रीकृष्ण को प्रणाम किया। मेरी माता ने भाव-विभोर होकर ज्योतिषी से मेरे पूव जन्म के सम्बन्ध मे 'त्रिप्रश्न' (दिशा, देश और काल सम्बन्धी प्रश्न) पूछे। ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि मैं 'त्रिसध्य' (दिन के तीन भाग—प्रात, मध्याह्न और सूर्यास्त) मे सदा प्रसन्न रहूँगा। साथ ही 'त्रिप्रस्तुत' (जिस हाथी से मद का स्राव हो रहा हो) आदि का दान करते देख मेरी माता को सचेत किया कि वह 'त्रिमद' (विद्या, धन और कुटुम्ब सम्बन्धी मद) का त्याग करे।

मेरी विद्या का प्रबन्ध 'त्रिस्थली' (काशी, गया और प्रयाग) मे किया गया। 'त्रिमधुर' (ऋग्वेद का एक अश), 'त्रिपदा' (गायत्री छद), 'त्रिवेद' (ऋक्, यजु और साम), 'त्रिस्कन्ध' (सहिता, तत्र तथा होरा—इन तीनो शास्त्रो से

एक मे बाँध करबनाया जाता है) धारण किए 'त्रिकूट' पर्वत (वह पवत जो सुमेरु का पुत्र माना जाता है) पर शोभित थे। 'त्रिदश, (देवता) 'त्रिगुरु' (देवगुरु बृहस्पति) को प्रणाम कर रहे थे। 'त्रिदेव' (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) प्रसन्नवदन थे।

उस समय 'त्रिदिव' (स्वर्ग-आकाश) मे 'त्रिदीर्घिका' (आकाशगगा-मदाकिनी) शोभित थी। 'त्रिवधु' (अप्सरा) 'त्रिपति' (इन्द्र) की सभा मे नृत्य कर रही थी। 'त्रिकोण' (कामरूप का एक सिद्ध-पीठ) के गृहस्थियो के घरो मे 'त्रिचित' (गार्हपत्य अग्नि—जो परिवार मे वशानुगत जलाई जाती है) प्रज्वलित थी। कुछ योगी 'त्रिकोण' (मोक्ष) प्राप्ति के लिए 'त्रिकुटि' (भौहो के मध्य के कुछ ऊपर का स्थान जहाँ त्रिकूट चक्र की स्थिति मानी जाती है) पर ध्यान लगाए बैठे थे। ज्योतिषिगण मेरी जन्म कुडली बनाने के लिए त्रिकोण और त्रिभवन (जन्म कुडली मे लग्नस्थल से पाँचवाँ और नवाँ स्थान) फलित कर रहे थे।

श्रेष्ठ 'त्रिकर्मा' (ब्राह्मण) ने उस समय 'त्रिककुभ' यज्ञ (नौ दिन मे होने वाला एक यज्ञ) आरभ किया। कुलगुरु से 'त्रिकुकद' (दस दिन मे समाप्त होने वाला योग) योग आरम्भ किया। 'त्रिपत्रक' (पलाश का पेड) की समिधा से अग्नि प्रज्वलित की गई। 'त्रिपथा' (मथुरा) के पडितो ने 'त्रिपदी छन्द' (गायत्री छन्द) मे मत्र बोलना आरभ किया। 'त्रिनाभिनी' (गगा) के तट पर 'त्रिपरिक्रान्त' (ब्राह्मण जो-जीविकार्थ यज्ञ कराए, अध्यापन करे और दान न ले) ब्राह्मणो ने 'त्रिपण' (पलाश), 'त्रिपर्णी' (वन कपास) की अग्नि मे 'त्रिपर्णिका' (वन कन्द) की आहूति डाली। 'त्रिपाठी' (तीन

वेदो का ज्ञाता) ब्राह्मणो ने 'त्रिपादिका' (गोधापदी लता) का आसन बना कर वेदी पर 'त्रिपाण' (तीन बार भिगोया हुआ सूत) पूरा। 'त्रिवेणी' की धार पर 'त्रिपिंड' (पिता, पितामह, और प्रपितामह को दिए गए तीन पिंड) दिए गए। ये सभी पडित 'त्रिपुड' (भस्म अथवा चन्दनादि की तीन आडी या अध चन्द्राकार रेखाएँ) धारण किए हुए थे।

मुझे त्रिफले की घुट्टी पिलाई गई। तदनन्तर त्रिरेख (शख) मे त्रिमधु (दूध, चीनी और मधु) का पान कराया गया। 'त्रिमधु' मे 'त्रिमार्गा' जल (गगा जल) मिला हुआ था। मेरी माता ने 'त्रिविनत' (देवता, ब्राह्मण और गुरु के प्रति श्रद्धालु) होकर मेरी 'त्रिवली' (पेट पर पडने वाले तीन वल) का चुम्बन किया। 'त्रिभग मुद्रा' मे त्रियामा (यमुना) के तट पर चित्रित श्रीकृष्ण को प्रणाम किया। मेरी माता ने भाव-विभोर होकर ज्योतिषी से मेरे पूर्व जन्म के सम्बन्ध मे 'त्रिप्रश्न' (दिशा, देश और काल सम्बन्धी प्रश्न) पूछे। ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि मैं 'त्रिसध्य' (दिन के तीन भाग—प्रात, मध्याह्न और सूर्यास्त) मे सदा प्रसन्न रहूँगा। साथ ही 'त्रिप्रस्तुत' (जिस हाथी से मद का स्राव हो रहा हो) आदि का दान करते देख मेरी माता को सचेत किया कि वह 'त्रिमद' (विद्या, धन और कुटुब सम्बन्धी मद) का त्याग करे।

मेरी विद्या का प्रबन्ध 'त्रिस्थली' (काशी, गया और प्रयाग) मे किया गया। 'त्रिमधुर' (ऋग्वेद का एक अश), 'त्रिपदा' (गायत्री छद), 'त्रिवेद' (ऋक्, यजु और साम), 'त्रिस्कन्ध' (सहिता, तत्र तथा होरा—इन तीनो शास्त्रो से

युक्त ज्योतिष शास्त्र) आदि का मैंने घोर अध्ययन किया। नित्य 'त्रिस्नान' (त्रिकाल स्नान) कर मैं 'त्रिदशाचार्य' (बृहस्पति) 'त्रिदशाध्यक्ष' (विष्णु) 'त्रिदशेश्वर' (इन्द्र) तथा 'त्रिदशेश्वरी' (दुर्गा) का ध्यान करता था। 'त्रिकाड' (अमर-कोष और निरुक्त) मैंने कठस्थ किए।

कथा साहित्य मे मेरी विशेष रुचि रही है। 'त्रिशकु' की कथा मुझे बहुत भाती थी। ये एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा हुए हैं। ये हरिश्चन्द्र के पिता थे। इनके बारे मे कहा जाता है कि ये पृथ्वी और स्वर्ग के बीच मे उलटे लटके हुए हे। विश्वामित्र अपने तपोबल से इन्हे सदेह स्वर्ग भेजना चाहते थे। इन्द्र ने उन्हे नीचे ढकेल दिया। विश्वामित्र ने इन्हे गिरने से रोक दिया। कर्मनाशा नदी इनकी लार से उत्पन्न मानी गई है।

'त्रिजटा' (अशोक वाटिका मे सीता जी के साथ रहने वाली राक्षसी) और 'त्रिशिख' (रावण का एक पुत्र) की कथा मुझे अब भी स्मरण है। 'त्रिशिरा' (एक राक्षस जिसे राम ने दडकारण्य मे मारा था) भी रावण कुटुम्ब का राक्षस था। 'त्रिपुर दाह' की कथा बडी रोचक है। मय ने स्वर्ग, अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी पर नगर बसाए थे। शकर ने इन्हे जला दिया। 'त्रियाजो' (विश्वामित्र) के ब्रह्मऋषि बनने की कथा कितनी भयावही है। 'त्रिकाय' (बुद्ध) और 'त्रियान' (महायान, हीनयान तथा मध्ययान) की अनेक कथाएँ मुझे याद ह। 'त्रिविष्टय' (तिब्बत) मे मनु-श्रद्धा मिलन की कथा रोमाचकारी है।

मैंने वैद्यक शास्त्र का अध्ययन किया। त्रिकुट (तीन कडवे

पदार्थो का समाहार-सोठ, पीपर, काली मिर्च) 'त्रिकार्पिक' (सोठ, अतीस और मोथा का समाहार) 'त्रिकुला' (यव-तिक्ता) 'त्रिकूट' (समुद्री लवण) और 'त्रिजात' (इलायची, दारचीनी, तेजपात) का उपयोग मुझे भली प्रकार आता हे। 'त्रिदोष' (वात, पित्त और कफ इन तीनो से उत्पन्न होने वाला रोग, सन्निपात) रोग का मैं उपचार कर सकता हूँ। 'त्रिसम' (सोठ, गुड और हड का समाहार) और 'त्रिफला' (हड, बहेडा, आवला) वैद्यक मे रामबाण समझे जाते हे। 'त्रिसर' (खिचडी) खाने से अनेक रोगो से छुटकारा मिल सकता है। 'त्रिलवण' (साभर, सेधा और सोचकर) उदर रोग का नाश करने वाला है।

वनस्पति जगत का मुझे यथेष्ठ ज्ञान हे। 'त्रिमजरी' (तुलसी) के पत्तो का सेवन रोगनाशक हे। 'त्रिफल' (सिघाडा) बहुत लाभदायक हे। 'त्रिख' (खीरा) स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हे। 'त्रिसधि', 'त्रिदल' आदि पुष्प-बेले, बहुत लाभदायक ह।

गणित शास्त्रियो ने मेरी सहायता से 'त्रिभगी,' 'त्रिज्या' आदि वृत बनाए है। अनेक प्रकार की 'त्रिकोण' मेरी सहा-यता से बनाई जाती ह। 'तेतीस,' 'तेतालीस' आदि सख्याओ मे मेरा अश विद्यमान है। कुछ अधविश्वासी मेरी सख्या को अशुभ मानते है।

मेरे प्यार भरे अनेक नाम है। 'तिन', 'तिन्न', 'तीनि', 'तिउ', (त्रे) आदि नामो से मैं प्रान्तीय भाषाओ मे बोला जाता हूँ। अग्रेज मुझे 'थ्री' नाम से पुकारते हैं। वास्तव मे 'थ्री' 'त्रि' का ही बदला हुआ रूप है।

भाषा वैज्ञानिकों ने मेरे नाम के मूल स्रोत तक पहुँचने का भारी प्रयत्न किया है। संस्कृत 'त्रीणि' से प्राकृत भाषा मे 'तिण्णि' बना। इसी 'तिण्णि' से 'तीन' निकला। 'ते', 'त', 'ति', 'तिर' रूपान्तर अनेक शब्दो मे पाए जाते है जैसे—'तेरह', 'तेतीस', 'तिरपन' 'तिरानवे' आदि। ये सभी रूपान्तर संस्कृत के 'त्रय' से निकले है।

'तीन-चार' बाते और। मैं अपने शत्रुओ को 'तीन तेरह' करने की शक्ति रखता हूँ। यही कारण है कि मुझे 'न तीन मे न तेरह मे' (उपेक्षित) समझ कर नही भुलाया जा सकता। अधिक 'तीन पाँच' करने वाला व्यक्ति मुझे पसन्द नही।

चार

मैं चार हूँ। मेरा विकास अन्तंमुखी हुआ है। 'चतुष्पथ' के निकट एक 'चतुष्पाटी' (नदी) बहती है। वहाँ एक 'चतुष्पाठी' (वह विद्यालय जिसमे चारो वेद पढाए जाते हो) विद्यालय मे मैंने 'चतुर्विद्या' (चार वेद, 6 वेदाग और धर्मशास्त्र, पुराण, मीमासा और तर्क (न्याय)—ये 14 विद्याएँ) ग्रहण की। मेरे गुरु 'चतुर्वेदी जी' (चारो वेदो को जानने वाला) मेरे लिए 'चतुष्पाणि' (विष्णु) के समान वन्दनीय थे। उन्होने मुझे ज्ञान कराया कि 'चतुर्मुख' (ब्रह्मा) ही 'चतुर्युगी' (सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) मे 'चतुर्वर्ग' (चारो पुरुषार्थ) प्राप्ति का एकमात्र साधन है।

मेरे गुरुजी ने मुझे 'चतुर्होता' (वेदोक्त चारो होम कराने वाला) बनने की विधियाँ बताईं। फिर मेरी देख-रेख मे 'चतुर्वीर यज्ञ' (चार दिन चलने वाला एक सोम-यज्ञ) सम्पन्न करवाया। तदनन्तर मैंने एक 'चतुरात्र यज्ञ, (एक वैदिक यज्ञ जो चार रात मे पूरा होता है) किया। मैं नित्य प्रति 'चतुर्होत्र (विष्णु) को प्रणाम करता हूँ।

मैंने छन्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया। मैं 'चतुष्पाद' (अमावस्या का पूर्वार्ध) मे 'चतुष्पदी' (चार चरणो वाला पद्य, गीत, चौपाई, छन्द आदि) की रचना किया करता हूँ। चतुर्वेद' (ऋक्, यजु, साम, अथर्व) मे वर्णित विभिन्न छन्द

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	चार
पंजाबी	चार
उर्दू	चार
कश्मीरी	चोर
सिंधी	चार
मराठी	चार
गुजराती	चार
बंगला	चार
असमिया	चारि/सारि
उड़िया	चारि
तेलुगु	नालुगु
तमिल	नालु/नान्गु
मलयालम	नालु
कन्नड	नाल्कु
संस्कृत	चतुर्
अंग्रेज़ी	फोर

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
५	IIII	IV	••••	ᐁᐁᐁ

तथा अलकारो पर मेरा पूर्ण अधिकार है ।

'चतुर्दोल'(चार आदमियो द्वारा ढोई जानेवाली पालकी, नालकी आदि) मे वैठ कर मैंने 'चतुर्धाम' (चारो दिशाओ मे स्थित हिन्दुओ के चार धाम—पुरी, वदरिकाश्रम, द्वारका और रामेश्वर) देखे है । मेरा विचार 'चतुर्दिशाओ मे व्याप्त सभी धर्म-तीर्थो को देखने का है। इस ससार मे 'चार दिन की चाँदनी' है फिर 'चार-पॉच' करने से क्या लाभ ? एक दिन 'चार के कधे चढ कर' (अर्थी पर) सभी को जाना है । 'चार पथ' (राजमार्ग) यही है कि 'चतुरानन' को सदा स्मरण रखें। 'चतुदशर्भुवन'(भू , भुव , स्व , मह , जन , तप , सत्य ये सात स्वर्ग और अतल, सुतल, वितल, तलातल महातल, रसातल और पाताल ये सात अधोलोक)का स्वामी वही है ।

में चतुस्सम्प्रदाय (वैष्णवो के ये चार सम्प्रदाय-श्री, माधव, रुद्र और सनक) मे विश्वास रखता हूँ । 'चार अवरू सम्प्रदाय' (मुसलमानो का वह सम्प्रदाय जिसमे सिर, भौ, दाढी और मूंछ कटवा डालते है) की मुझे जानकारी है । 'चार यारी सम्प्रदाय' (सुन्नी सम्प्रदाय, चॉदी का चौकोर सिक्का जिसमे कलमा या मुहम्मद के चारो साथियो के नाम खुदे रहते है) के लोगो से भी मेरी जान पहचान है ।

मैंने 'चतुरन्ता' (पृथ्वी) पर 'चतुर्भाक्' राजाओ (वे राजा जो प्रजा की आय का चौथा भाग लेते है) का राज्य देखा है । उनकी चतुरगिनी सेना (हाथी, घोडा, रथ और पैदल- इन चारो से युक्त) वहुत शक्तिशाली थी। उनकी सीमा चतुरत (चारो ओर से सीमित) नही थी । केवल 'चतुर्मास' (वरसात का चौमासा-आपाढ पूर्णिमा या शुक्ल

द्वादशी से कार्तिक शुक्ल द्वादशी तक का काल) मे युद्ध-बन्दी होती थी। अन्यथा राजा स्वय 'चार आईना' (एक प्रकार का कवच जिसमे छाती, पीठ और दोनो भुजाओ पर बाँधने के लिए लोहे की चार पट्टियाँ होती हे) पहने युद्ध-स्थल मे जाया करता था। राजा 'चार गुर्देवाला' वीर (बहादुर) होता था। 'चार चक्षु' (गुप्तचर जिसके चक्षु है-राजा) सदा 'चार-चार' (गुप्तचर) की सहायता लिया करता था। 'चार पालो' (गुप्तचरो) और 'चार पुरुषो' (भेदियो) का जाल बिछा रहता था। शत्रु की सेना का भेद लगाने के लिए राजा 'चार प्रचार' किया करता था (गुप्तचर लगाया करता था)। राजा के विजयी होने पर उस पर 'चार तूल' (चॅवरी) झोली जाती थी। 'चार बीसी' (अस्सी) 'चार भट' (वीर योद्धा) उसके आगे तलवार के कौतुक दिखाते चलते थे। उस काल मे शत्रु को 'चार मेख' करना (अपराधी को लिटा कर उसके हाथ पैर खूँटे से बाँधने की सजा) साधारण बात थी।

मै 'चतुर्थ काल' (भोजन का विहित काल, दोपहर) मे भोजन करता हूँ। मेरा भोजन बहुत सात्विक है। मैं 'चतुर् उष्ण' (सोठ, पीपल, मिर्च और पिपरामूल) का सेवन करता हूँ। कभी-कभी मे 'चतुर्जातक' (इलायची, दारचीनी, तेज-पत्र तथा नागकेसर का समाहार) का प्रयोग करता हूँ। उदर-रोग के लिए 'चतुर्बीज' (काला जीरा, अजवायन, मेथी और चसुर का समाहार) खाता हूँ। 'चतुरम्ल' (अमलवेल, इमली, जबीरो, नीबू) का सेवन कम करना चाहिए। मैं चतुसम (कस्तूरो, चदन, कुमकुम और

कपूर के योग से बनने वाला) सूँघता हूँ। गरमी मे चार मग्ज (खरबूजा, खीरा, ककडी और कद्दू के बीज की गिरी) खाता हूँ।

'चतुराश्रम' (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास) के अनुसार जीवन यापन मुझे रुचिकर लगता हूं। 'चतुर्वर्ण' (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र) अपने-अपने कर्त्तव्य निभाएँ तो ससार मे सुख सभव है। भला काम वही समझा जाए जिसे 'चार आदमी' (दो चार भले आदमी) अच्छा कहे।

आप भारत की शोभा को 'चार चाँद' लगाइए। जो शत्रु इस पर आक्रमण करे उसे आप 'चारो खाने चित्त' मारिए। आपकी कीर्ति 'चार के कानो' तक अवश्य पहुँचेगी। जिस मनुष्यो की 'चारो फूट चुकी' (दो स्थूल आँखे और दो हृदय की) हैं वह देश की क्या भलाई कर सकता हे ? आप मे इतनी शक्ति होनी चाहिए कि शत्रु आप का यश सुनते ही 'चार पर पीठ लगा ले' (सख्त बीमार पड जाए)। सयम द्वारा 'चार दत' (ऐरावत हाथी) सी शक्ति प्राप्त की जा सकती है।

अपने जन्म और नामकरण के विषय मे कुछ बताना आवश्यक समझता हूँ। 'चतुर्मास' के चौथे महीने की 'चतुर्थी' को मेरा जन्म हुआ। मेरा नाम 'चत्वारि' रखा गया। प्राकृत मे मुझे 'चत्तारि' कहने लगे। खडी बोली मे मै 'चार' कहलाया। 'चहुँ', 'चारि', 'चारो', 'चार', 'चतुर्', चतुष्', 'चतुस्', 'चत्वारि' आदि मेरे अनेक स्नेहपूर्ण नाम है। सयुक्त सख्याओ के 'चौ', 'चो', 'चौर' पर सस्कृत 'चतुर्' तथा प्राकृत के 'चउरो' का प्रभाव है। यथा— चौतीस चौरासी, आदि।

पाँच

पच-देव (विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश और दुर्गा) को मेरा बार-बार प्रणाम स्वीकार हो। पच-बाहू को (शिव) जिस पर पचकाम (काम, मन्मथ, कदप, मकरध्वज और मीनकेतू) के पच-बाण (सम्मोहन, उन्मादन, स्तभन, शोषण ओर तापन) का प्रभाव नही होता, मै पचाग प्रणाम (घुटना, सिर, हाथ तथा छाती को पृथ्वी से सटा कर और आँखो को देवता के चरणो की ओर करके किया जाने वाला प्रणाम) करता हूँ। पच गौड (उत्तरी भारत के पाँच प्रकार के ब्राह्मण—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड, मैथिल और औत्कल) और पच-द्रविड (दक्षिण भारत के पाँच प्रकार के ब्राह्मण—महाराष्ट्र, तैलग, कर्णाट, गुजर ओर द्रविड) को मेरा नमस्कार। पचपिता (पाँच प्रकार के पिता—पिता, उपनेता (उपनयन कराने वाला—जनेऊ दिलाने वाला), श्वशुर, अन्नदाता और भय-त्राता) का मै अभिनन्दन करता हूँ। पच गग (गगा, यमुना सरस्वती, किरणा और धूतपापा) का जल पच गव्य (गाय का दूध, दही, घी, गोबर और मूत्र) मे मिला कर पच भूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश आदि से बना शरीर) की शुद्धि करता हूँ। पच रश्मि (सूर्य) की पच मुद्रा (पूजन विधि के अन्तगत पाँच प्रकार की मुद्राएँ—आवाहनी, स्थापनी, सन्नीधापनी, सम्बन्धिनी और सम्मुखीकरणी) मे पूजा करता

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	पाँच
पंजाबी	पंज
उर्दू	पाँच
कश्मीरी	पाँछ
सिंधी	पंज
मराठी	पाँच/पाच
गुजराती	पाँच
बंगला	पाँच
असमिया	पाँच/पास्
उडिया	पाँच/पाँच्
तेलुगु	ऐदु
तमिल	अंजु/ऐन्दु
मलयालम	अन्जु
कन्नड़	ऐदु
संस्कृत	पचन्
अंग्रेज़ी	फाइव

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	
b	IIIII	V	—	▼▼▼ ▼▼

हूँ। पच कन्या (अहिल्या, द्रौपदी, कुती, तारा और मन्दोदरी) को मैं स्मरण करता हूँ । पच वृक्ष (पाँच देव वृक्ष—मवार, पारिजात, सतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन) से अपनी आत्म-कथा पूर्ति की कामना करता हूँ ।

पचवटी (पीपल, बेल, बड, हड और अशोक ये पाँच वृक्ष जहाँ निकट लगे हो) के नीचे पचमी को मेरा जन्म हुआ। उसी समय पच वर्ण (ऊकार, उकार, मकार, नाद और बिन्दु से सयुक्त—ओकार) की ध्वनि से पच शैल (एक पर्वत) गूंज उठा। पच वल्कल (बड, पीपल, पाकड, गूलर और बेत) को जल मे उबाल कर मेरा स्नान कराया गया। पच सुगन्धक (कपूर, शीतल चीनी, लौग, सुपारी और जायफल) से वातावरण सुगन्धयुक्त किया गया। पच शारदीय यज्ञ (एक यज्ञ) आरभ कराया गया। मुझे पच महाव्याधि (अर्श, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद) से बचाने के लिए अनेक जतन किए गए। ब्राह्मणा को 'पच लाँगलक' (पाँच हलो से जोती जाने वाली भूमि का दान) दिया गया। पचरत्न (नीलम, हीरा पद्मराग मणि, मोती और मूंगा) लुटाए गए।

पचनद प्रदेश (पाँच नदियो का देश—पजाब) मे 'पच-तृण' (कुश, कास, सरकडा, डाभ और ईख) के आसन पर बैठ कर मैंने पच ज्ञान (पाशुपत दर्शन) प्राप्त किया। बाल्यकाल से पच मकार (मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन) का त्याग कर पच-महायज्ञो (स्वाध्याय-ब्रह्मयज्ञ, होम-देव यज्ञ, बलिवैश्वदेव-भूतयज्ञ, पिंड क्रिया-पितृयज्ञ और अतिथि-पूजन-नृयज्ञ) का भागी बना। पच-महाव्रत (अहिंसा, सूनृता-

सत्य और सद्भावपूर्ण वचन, अस्तेय—चोरी न करना, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह—मपत्ति न जोडने वाला) धारण किए। पचतीर्थी (पाँचो तीर्थ—विश्राति, शौकर, नैमिष, प्रयाग और पुष्कर) करने के लिए पचशाख (हाथी) पर बैठ पच शब्द (शख ध्वनि आदि पाँच मगल वाद्य) करता हुआ भ्रमण करता रहा। पाँचो तीर्थों का पचनीराजन (दीपक, कमल, आम, वस्त्र और पान इन पाँच वस्तुओ द्वारा की गई आरती) किया। पचपर्वो (अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या और रविसक्राति) के दिन पच नाथो (बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रगनाथ और श्रीनाथ) के दर्शन किए। वहाँ पच जन (देव, मनुष्य, नाग, गधर्व और पितर) के दर्शन सुलभ हुए।

पच चोल (हिमालय श्रेणी का एक भाग) मे पच-प्राण (शरीर मे सचरण करने वाली वायु के पाँच भेद—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान) की साधना की। तदनन्तर पच तन्मात्र (रूप, रस, गध, स्पर्श और शब्द) की साधना की। वहाँ से पचस्रोत (एक तीर्थ) गया। फिर पचाग्नि (चारो ओर अग्नि और एक ओर से सूर्य की गरमी मे तप करना) साध कर 'पचतपा' कहलाया। तदनन्तर पचकोश (अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश) पर चिन्तन मनन किया।

अपने जीवन का कुछ समय पच घाट (काशी का एक प्रसिद्ध घाट जो कई नदियो का सगम स्थान माना जाता है) पर व्यतीत किया। वहाँ पचदशी (पूर्णिमा और अमा-

वस्था) के दिन पच भर्तारी (द्रौपदी) की कथा सुनाई। पच-तत्री (पाँच तारो वाली वीणा) पर जिस समय पच सधि (स्वर सधि, व्यजन सधि, विसग सधि, स्वादि सधि और प्रकृति भाव) से युक्त पचाली (एक प्रकार का गीत) गीत गाया जाता था तो श्रोता भाव विभोर हो जाते थे। पच-चामर और पच पद आदि छन्दो और ऋचाओ मे पच-वाहो (शिव) की स्तुति की जाती थी। काशी के पच प्रासाद (वह मन्दिर जिसमे चार शृग और बीच मे गुबद हो) उस वेला मे सिहर उठते थे। वहाँ पर मैंने ईश्वर के पच कृत्य (ईश्वर के सृष्टि, ध्वस, सहार, तिरोभाव और अनुग्रह-करण) पर विसद् प्रकाश डाला। पच क्रोशी (काशीपुरी जो पाँच कोसो मे बसी हुए है) की वह शोभा किस के मन को नही हर लेती होगी।

हे भारतवासियो, तुम पाँच महापातको (ब्रह्म हत्या, सुरापान, स्तेय, गुरुतल्प गमन—गुरुपत्नी के साथ अनुचित सम्बन्ध, और उक्त चार महापातको को करने वाले का ससग) से बचो। पच लक्षण (पुराण) का अध्ययन करो। तुम पच सूना पाप (गृहस्थ के घर मे निम्नलिखित पाँच वस्तुएँ जिनके द्वारा छोटे-छोटे कीडो की हिंसा हो जाया करती है—चूल्हा, चक्की या सिलबट्टा, झाड़ू, ओखली और पानी का घडा) मे मुक्त रहो।

हे ग्रामीण भाइयो, पचायत शासन पद्धति को अपनाओ। पच मे परमेश्वर का निवास समझो। पचनामे का आदर करो। पचायती राज्य भारत के लिए नया नही है। व्यथ की पच की पुकार (सहायता माँगना) का कोई लाभ नही।

वैद्यक के विषयो मे मेरी रुचि जन्मजात है। रोग के निदान के लिए मै पच कर्म (वमन, विरेचन, नस्य-सुघनी, निरूह-एनिमा और अनुवासन (एनिमादि) मे विश्वास रखता हूँ। पच कषाय (जामुन, सेमर, बेर, मौलसिरी और वरियारा) उत्तम रस है। पचकोल (पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रकमूल और सोठ) का सेवन शीत ऋतु मे हितकर है। उदर रोग के लिए पचक्षार (पाँच प्रकार के लवण—काच, सैंधव, सामुद्र, विट्—साभर नमक, और सौवर्चल) का प्रयोग लाभदायक है। पच गुप्त (कछुवा) की हड्डी अनेक औषधियो मे काम आती है। पच तिक्त (पॉच कडवी औषधियाँ— गुडच, भटकटैया, सोठ, कुठ और चिरायता) का सेवन स्वास्थ्यवर्द्धक है। पच पित्त (सूअर, बकरा, भैसा, मछली और मोर का पित्त) की औषधियाँ बनती है। पचबला (बला, अतिबला, नागबला, राजबला और महाबला) पाँच औषधियाँ है। पचमूत्र (गाय, बकरी, भेड, भैस और गधी का मूत्र) और पचाज (बकरी का दूध, दही, घी, पुरीष—विष्ठा और मूत्र) का प्रयोग औषधियो मे कम किया जाता है। पचदसा (आँवला) वैद्यक की मुख्य औषधि है। पच लोहक (सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा और सीसा भस्म का प्रयोग अच्छा माना गया है। पच शस्य (धान, मूँग, तिल, उडद और जौ) से अनेक औषधियाँ बनती है।

मेरे ज्ञान के कारण मेरी पाँचो अगुलियाँ सदा घी मे रहती है (लाभ ही लाभ होता है)। पाँच सवारो मे नाम लिखाना (पात्रता न होते हुए भी अपने को बडो मे सम्मिलित करना) मुझे नही भाता। मैं पचानन (शेर) के

समान शक्तिशाली होने मे अपना विश्वास रखता हूँ।

अधिक क्या ! मेरा नाम वैदिक काल मे पच था। प्राकृत, अपभ्र श काल तक पज, पाच, पच आदि हुआ। पॉ, पज, पचम्, पजम आदि मेरे अनेक उपनाम हे। मेरे सयुक्त अक्षरो मे प्राकृत रूप 'पण' तथा 'पन' का प्रभाव है—पद्रह, तिरेपन, इक्यावन, चौवन आदि। कही 'पन' की जगह 'वन' भी हे। अन्य अक्षरो मे 'पच' रूप हे—पच्चीस।

पचाक्षर मत्र (ॐ नम शिवाय) पढ कर मैं विसर्जन करता हूँ।

छ

मैं छ हूँ। षट्, षड्, षप्, षण् मेरे ही दुलार भरे नाम हैं। छह्, छि, छउँ, छो, छय आदि मेरे आधुनिक नाम है। अंग्रेजी के सिक्स मे मेरा षष्ठ रूप निहित है। काल और स्थान भेद के कारण यह परिवर्तन बढ गया। मैं 'एक' की छठी पीढी मे उत्पन्न हुआ हूँ। षष्ठी के दिन षष्ठ काल (भोजन का छठा काल) मे षष्ठ भक्त (तीसरे दिन शाम को भोजन खाने वाला) के षट्पदातिथि (आम) की छाया मे मेरा जन्म हुआ अत षष्ठ या छह् कहलाया।

मेरे जन्म के समय षड् राग (भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, मालकोस और दीपक) अलापे गए। छठी के दिन मुझे षड्रस (छ प्रकार के स्वाद—मीठा, नमकीन, कडवा, तीखा, कसैला और खट्टा) की जन्म घुट्टी पिलाई गई। मेरे षड् अगो (सिर, धड, दो पैर और दो हाथ) पर षड् धूप (चीनी, गोघृत, मधु, गुग्गुल, अगरु काष्ठ और श्वेत चन्दन के मिश्रण से बनाई गई धूप बत्ती) का लेपन किया गया। षड्पद (भ्रमर) और षड्पदी (भ्रमरी) ने मिलकर नृत्य किया। षट्शास्त्री (वह जो छ हिन्दू शास्त्रो का ज्ञाता हो) ने भविष्यवाणी की कि बालक षड्विकार (जीव के छह विकार—उत्पत्ति, वृद्धि, बाल्यावस्था यौवन, वार्धक्य और मृत्यु) मे प्रसन्न रहेगा और षट्शास्त्र (वेदो को प्रमाण

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	छ
पंजाबी	छे
उर्दू	छै
कश्मीरी	शे
सिंधी	छ
मराठी	सहा
गुजराती	छ
बंगला	छय/छाय
असमिया	छय/छ/छोय/सो
उड़िया	छ/छा
तेलुगु	आरू
तमिल	आरू
मलयालम	आरू
कन्नड़	आरू
संस्कृत	षट्
अंग्रेज़ी	सिक्स

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
ω	T	VI	⁚	▼▼▼ ▼▼▼

मान कर चलने वाले छ हिन्दू दर्शन—न्याय, साख्य, योग, पूर्व मीमाँसा, उत्तर मीमाँसा और वैशेषिक—का ज्ञाता बनेगा।

आयु पाकर मैं षट्कर्म (ब्राह्मण के छ कर्त्तव्य—अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह) में प्रवृत्त हुआ। यदाकदा निर्वाह सम्बन्धी छ कर्म (उछ—खेत मे कटाई के बाद पडे हुए दानो को चुगकर जीवन बिताना, प्रतिग्रह, भिक्षा, वाणिज्य, कृषि और पशु-पालन) का आश्रय भी लिया। छ तान्त्रिक कर्म (मारण, उच्चाटन, स्तभन, वशीकरण, शान्ति और विदूषण—अपमानित करना) सीखे। योग सम्बन्धी छ कर्म (धोती—कपडे की चार उँगल चौडी और पद्रह हाथ लम्बी, गीली पट्टी को निगलने और फिर बाहर निकालने की क्रिया, वस्ती—गुदादि मे पिचकारी देना, नेती—पेट मे पट्टी डाल कर आँत साफ करना, त्राटक-किसी बिन्दु पर दृष्टि जमाने की क्रिया, नौलिक और कपालभाती—एक विशेष प्रकार की श्वास क्रिया) से मैं अछूता नही रहा। षटचक्र (शरीर के भीतर सुषुम्ना नाडी के मध्य स्थित अति सूक्ष्म कमलाकार छ चक्र—मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा) की साधना की।

षड् रिपु (काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर) को वश मे करने के कारण षड्वश्य (इन छ इन्द्रियो को जिसने वश मे कर लिया है) कहलाया। षड् वर्ग (छह ज्ञानेन्द्रियाँ—आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा तथा मन) साधना मेरा लक्ष्य रहा। षट्क सम्पत्ति (शम, दम, उप-

रति—विराग, तितिक्षा—क्षमा, श्रद्धा और समाधान) सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। षड् अग्नि (कर्मकाड सम्बन्धी छ प्रकार की अग्नि—गार्हपत्य—परिवार मे वशानुगत जलाई जाने वाली अग्नि, आहवनीय—आहूति देने योग्य, दक्षिणाग्नि—गार्हपत्य अग्नि के दक्षिण मे रखी जाने वाली अग्नि, सम्याग्नि, आवस्थ्य—लौकिकाग्नि, औपासनाग्नि—गृह्याग्नि) प्रज्वलित रखने की विधि से अवगत हुआ।

तीर्थ यात्रा करना मेरे जीवन का अभिन्न लक्ष्य रहा। मैं षड् मास तक षड् तीर्थ (गया, गयासुर, गायत्री, गयागज, गयादित्य और गधाधर) मे निमज्जन करता रहा। षट्कूटा (भैरवी का एक रूप) की आराधना की। षण्मुख—स्कध और कार्तिकेय) की पूजा करता रहा। षड्बाहू—(दुर्गा) को भक्तिभाव से प्रसन्न किया। षड्-अग (वेद के छ अग—शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छद, व्याकरण और ज्योतिष) ज्ञान के कारण मै अपने आप को कृतकृत्य समझता हूँ। षाण् मातुर् (कार्तिकेय—जिसका पालन छ माताओ ने किया था) की कृपा से मैंने षाष्ठिक व्रत (चार मास का एक व्रत जिसमे दूध के साथ केवल हर छठे दिन भोजन किया जाता है) पूरा किया।

राजनीतिक व्यवस्था से मै भिन्न नही रहा। मैंने षाड्गुण्यवेदी (राजनीति के छ अगो का ज्ञाता) की उपाधि प्राप्त की। मै षड्गुण (परराष्ट्र नीति की सफलता के लिए राजा द्वारा व्यवहार्य छ उपाय—सधि, विग्रह, यान—चढाई, आसन—विराम, द्वैधी—भाव-दुविधा और सश्रय—परस्पर

सहायता के लिए की जाने वाली सधि) नीति का सफल प्रयोग जानता हूँ। मेरा विश्वास है कि षड्-अगिनी सेना (सारे अगो से पूर्ण सेना) ही देश की रक्षा कर सकती है।

आयुर्वेद के सिद्धान्त के अनुसार मैं षड्-ऊष्ण (पीपल, काली मिर्च, सोठ, पिपरामूल, चव्य और चीता), छ कटु मसाले) षड् लवण आदि का उपयोग करता हूँ। षड्-ऋतु (वसन्त ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त तथा शिशिर) मे ऋतु अनुकूल भोजन करता हूँ। षण्मुखा (खरबूजा) को जी भर कर खाता हूँ। सात्विक वृत्ति के कारण मै षट्ज्य (कामदेव का धनुष) का आखेट नही बन पाता।

मै छठी का राजा (पुश्तैनी अमीर) हूँ। पराजय मेरी छठी मे नही पडी (भाग्य मे नही लिखी गई)। बडे-बडे शत्रुओ को मैने छठी का दूध याद दिला दिया (बचपन का खाया पीया निकलना)। छठे-चमासे (कभी-कभी) मुझे मेरी छठी-बरही (छटी और बरही के उत्सव) की याद दिलाई जाती है जिसमे लाखो छ माशी (गिन्नियाँ) बाँटी गई थी।

सृष्टि के उत्पत्ति सम्बन्धी शशमाही और शशरोजा सिद्धान्त(मुसलमानो की धारणा के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति छ दिन मे हुई) मैने पढा है। मै षड्-समन्वागत (बुद्ध) के दुखवाद सिद्धान्त का पक्षपाती नही हूँ।

सात

मैं छ से एक अधिक सात या सप्त हूँ। मैं देवी देवताओ को प्रणाम करके अपनी लघु आत्मकथा आपके सामने निवेदन करूँगा। सप्त-लोकमय, सप्तशीर्ष, सप्त-महाभागी (विष्णु) को मेरा प्रणाम। सप्ताश्व, सप्त-सप्ति (सात घोडो से युक्त रथ वाला—सूर्य) को मेरा नमस्कार। सप्तर्षि (शतपथ ब्राह्मण के अनुसार—गोतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि। महाभारत के अनुसार—मरीचि, अत्रि, अगिरा, पुलह, कृतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ) के समक्ष मैं नमन करता हूँ। सप्त पुरी (अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काची, अवन्तिका, और द्वारका) का मै ध्यान करता हूँ क्योकि इनका स्मरण-मात्र ही मोक्ष देने वाला है। सप्त लोक (भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक) मे निवास करने वाले सभी प्राणियो का मैं कल्याण चाहता हूँ। सप्त पाताल (सात अधोलोक—अतल, बितल, सुतल, रसा-तल, तलातल, महातल और पाताल) के जीवो की मै शुभ-कामना करता हूँ।

मैं सप्त पुरुष (सात पुरस लम्बा) युवक हूँ। सप्त जिह्व (सात जिह्वा वाला) होते हुए कम बोलता हूँ। सप्त-पदी (विवाह की एक विधि जिसके अनुसार वर-वधू अग्नि

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	सात
पंजाबी	सत
उर्दू	सात
कश्मीरी	सथ
सिंधी	सत/सत्त
मराठी	सात
गुजराती	सात
बंगला	सात/शात्
असमिया	सात/हाट
उड़िया	सात/साता
तेलुगु	एडु
तमिल	एलु
मलयालम	एलु
कन्नड़	एलु
संस्कृत	सप्तन्
अंग्रेज़ी	सैवन

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
7	TT	VII	·· —	▼▼▼ ▼▼▼ ▼

की सात बार परिक्रमा देते हैं) के समय मेरी धर्मपत्नी मेरे विचित्र शरीर को देख कर चकित रह गई थी। सप्त भूम (सात मजिल वाला) भवन मेरा निवास स्थान है। अपनी साधना के बल पर मैं सप्त मरीचि (अग्नि) को निगल सकता हूँ। सप्तनाडिका (सिंघाडे) के ढेर के ढेर हडप कर सकता हूँ। सप्तमत्र (अग्नि) मुझे देख कर कम्पित हो उठती है। मेरे सप्त रक्त (लाल रगवाले शरीर के सात अग— हथेली, तलवा, नख, आँख का कोण, जीभ, ओठ, तालु) सप्त सिरा (पान—ताम्बूल) चबाए हुए मुख के समान लाल है।

सप्तार्णव (सात समुद्र—हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर, अध महासागर, उत्तरी हिम महासागर, दक्षिणी हिम-महासागर आदि) और सप्त समुद्रान्त (पृथ्वी) पर मेरा एकच्छत्र राज्य रहा है। मेरी सप्त प्रकृति (राज्य के सात अग—राजा, मत्री, मित्र, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना) उस काल मे ख्याति प्राप्त कर चुकी थी। सप्तद्वीप (पृथ्वी के सात खड—एशिया, उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि) मे पूर्ण शान्ति थी। सप्त रात्रक (सात रात तक चलने वाला) यज्ञ बहुत होते थे। बाद मे सप्त बौध्यग कुसुमाढ्य (बुद्ध) और सप्त भगी (स्याद्वाद के मानने वाले जैन) सम्प्रदाय के लोगो ने मेरे शासनकाल की बडी प्रशसा की है।

जिस समय मैं सप्त मास्य (सात महीने का) था तो मैंने सप्त गगा (हरद्वार से ऊपर एक स्थान जहाँ गगा सात धाराओं मे बहती है) के निकट अपनी सप्तसू (सात

वच्चो की माँ) को त्याग सप्तला (चमेली, सातला, नवमल्लिका, रीठा, घुँघुची, गुजा) की माला धारण कर सप्तलोकी नाथ (शिव) को प्रसन्न किया था। सप्तग्रही (सात ग्रहो का एकस्थान पर आना) के योग के समय मैंने सप्तार्चि (शनिग्रह) को प्रसन्न करने के लिए एक सप्तशती (सात सौ पद्यो का सग्रह) प्रशस्ति रूप मे लिखी। दक्षिणा मे सप्त दान (एक प्रकार का दान जिसमें सात पात्रो मे सात प्रकार की चीजे भरकर दी जाती हैं) दिया।

सगीत विद्या मे मेरी रुचि है। सप्तक सगीत के सात स्वर—(षड्ज, ऋषभ, गाधार, मध्यम, पचम, धैवत, और निषाद) की मेरी भारी साधना है। अपनी माता की सप्तकी (कटिबन्ध) के नूपरो मे स्वर मिलाकर मै गीत गाया करता था। अपने यौवनकाल मे मेरी सगीत विद्या की कीर्ति सातसमुद्र पार (बहुत दूर) पहुँची थी। श्रोतागण मेरा सगीत सुनते-सुनते सात भूल जाते (होशहवास खोना) थे। मैं सात राजाओ की साक्षी देकर (किसी बात की सच्चाई पर जोर देना) कहता हूँ कि मैंने अपनी सगीत विद्या को सात परदो के अन्दर (छिपाकर रखना) नही रखा।

मेरी तो आपसे यही विनती है कि आप किसी से सात-पाँच (दगा, तकरार) न करे। यदि ऐसा किया तो समझो सात की नाक कट (सारा परिवार बदनाम होना) गई। चुगलखोर को एक दिन सात घर की भीख माँगनी पडती (घर घर भीख माँगना) है। उसका माँग कर खाया हुआ भोजन सात धार होकर (बिना पचे निकल जाना) निकल जाता है।

आठ

मैं अष्ट या आठ नामधारी आपको अपनी आत्मकथा सुनाता हूँ। सर्वप्रथम अष्टमूर्ति (शिव—जो आठ रूपों वाले हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र और ऋत्विक्) को मेरा अष्ठांग (शरीर के वे आठ अंग जिनसे साष्टांग प्रणाम किया जाता है—घुटना, हाथ, पाँव, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि) प्रणाम स्वीकार हो। अष्टभुजी माता दुर्गा तथा अष्ठनायिका (दुर्गा की ये आठ शक्तियाँ—उग्रचंडा, प्रचंडा, चंडोग्रा, चंडनायिका, अति-चंडा, चामुंडा, चंडा, तथा चंडवती) को मैं अपना शीश झुकाता हूँ क्योंकि वह दुष्टों का दलन करने वाली है। अष्टकृष्ण (वल्लभ सम्प्रदाय मे माने जाने वाले कृष्ण के आठ रूप—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचन्द्रमा और मदनमोहन) को मेरा नमस्कार। अष्ट कर्ण (ब्रह्मा) से मेरी प्रार्थना है कि वे मुझे अष्टसिद्धि (आठ अलौकिक शक्तियाँ—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व) प्रदान करें। अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए मैं अष्टाक्षर मन्त्र (ॐ नमो नारायणाय) का जाप करता हूँ।

मैं अष्टधाती (जिसके माता-पिता का ठीक पता न हो) न्हीं हूँ। 'एक' की आठवी पीढी मे मेरा जन्म हुआ। अठ-

मेरे अनेक नाम है। पहले-पहल मैं सप्तम् या सप्त कहलाया। अंग्रेजी का 'सेविन' मेरे सप्तम् का रूप जानो। सत्त, सत्ता, सत्तो, सत्ती आदि नाम से मैं भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे जाना जाता हूँ। प्राकृत काल मे मैं सत्त कहलाता था। हिन्दी वाले मुझे सात कहने लगे। मेरी सयुक्त सख्याओ मे सत्त या सत रूप प्राय मिलता है—सत्ताईस, सतासी। मेरा 'सैं' रूप भी है जैसे—सैंतीस। 'सर' या 'सड' मेरा असाधारण रूप है यथा—सरसठ या सडसठ।

आठ

मैं अष्ट या आठ नामधारी आपको अपनी आत्मकथा सुनाता हूँ। सर्वप्रथम अष्टमूर्ति (शिव—जो आठ रूपो वाले हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र और ऋत्विक्) को मेरा अष्ठाग (शरीर के वे आठ अग जिनसे साष्टाग प्रणाम किया जाता है—घुटना, हाथ, पॉव, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि) प्रणाम स्वीकार हो। अष्टभुजी माता दुर्गा तथा अष्ठनायिका (दुर्गा की ये आठ शक्तियाँ—उग्रचडा, प्रचडा, चडोग्रा, चडनायिका, अति-चडा, चामुडा, चडा, तथा चडवती) को मैं अपना शीश झुकाता हूँ क्योकि वह दुष्टो का दलन करने वाली है। अष्टकृष्ण (वल्लभ सम्प्रदाय में माने जाने वाले कृष्ण के आठ रूप—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचन्द्रमा और मदनमोहन) को मेरा नमस्कार। अष्ट कर्ण (ब्रह्मा) से मेरी प्रार्थना है कि वे मुझे अष्टसिद्धि (आठ अलौकिक शक्तियाँ—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व) प्रदान करे। अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए मैं अष्टाक्षर मत्र (ॐ नमो नारायणाय) का जाप करता हूँ।

मैं अष्टघाती (जिसके माता-पिता का ठीक पता न हो) नही हूँ। 'एक' की आठवी पीढी मे मेरा जन्म हुआ। अठ-

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	आठ
पंजाबी	अठ
उर्दू	आठ
कश्मीरी	आठ
सिंधी	अठ/अट्ठ
मराठी	आठ
गुजराती	आठ
बंगला	आट
असमिया	आठ
उडिया	आठ/आठा
तेलुगु	एनिमिदि/ येनिमिदि
तमिल	एट्टु
मलयालम	सट्टु
कन्नड	एण्टु
संस्कृत	अष्टन
अंग्रेजी	एट

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
[illegible]	[illegible]	VIII	•••	▼▼▼ ▼▼▼ ▼▼

वॉसा सस्कार (गर्भ के आठवे महीने मे होने वाला सस्कार) के समय मेरी मॉ ने अप्टधातु दान (सोना, चॉदी, ताबा, रॉगा, जस्ता, लोहा, शीशा और पारा) किया। मै अपनी माता से उत्पन्न अष्टम सतान हू। किम् वदन्ति हे कि मेरा जन्म अष्टका (अगहन, पूस, माघ और फाल्गुन की कृष्णाष्टमी) को किसी महीने मे हुआ था। इसी कारण मेरा नाम अष्ट पडा।

आठ वप की आयु मे अष्टाग योग (योग के आठ अग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि) सीखने का कार्य आरभ किया। अष्टाग आयुर्वेद (आयुर्वेद के आठ अग या विभाग—शल्य—चीरफाड, शालाक्य—गर्दन से ऊपर की इन्द्रियो की चिकित्सा, काय चिकित्सा—सर्वागव्यापी रोगो की चिकित्सा, भूत विद्या—पिशाच आदि की बाधा से उत्पन्न रोगो की चिकित्सा, कौमार मृत्य—शिशु चिकित्सा, अगद तत्र—सर्पादि दत की चिकित्सा, रसायन तत्र—पदार्थों का तत्वज्ञान, और वाजीकरण—औपधि द्वारा शक्ति वर्धन) की शिक्षा ग्रहण की। अष्ट वग (आठ औपधियाँ—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, ऋद्धि और वृद्धि) को मै आयुर्वेद का बीज मत्र मानता हू।

मैंने हठयोग के अष्ट कमल दल (मूलाधार से मस्तक तक माने गए अष्ट चक्र) का पूण ज्ञान प्राप्त किया। अष्टहव्य (यज्ञादि की सामग्री के आठ हव्य—पीपल, गूलर, पाकड, बरगद, तिल, सरसो, पायस और घृत) से यज्ञ

करते हुए अष्टपदी छन्द मे देवताओ को प्रसन्न किया।

अष्टाग मार्ग (बुद्ध द्वारा उपदिष्ट दुखनिवृत्ति का आठ अगो वाला मार्ग—सम्यग्दृष्टि, सम्यक्सकल्प, सम्यग्वाक्, सम्यक्कर्म, सम्यगाजीव, सम्यग्व्यायाम सम्यक् स्मृति और सम्यक्समाधि) पर चलने का मैंने पूर्ण प्रयत्न किया है। यही कारण है कि मै आठो याम प्रसन्न रहता हूँ।

सगुण अवतार की महिमा को समझने के लिए मैं अष्ट-छाप के कवियो (गोसाईं विट्ठलनाथ द्वारा स्थापित आठ कवियो का दल—सूरदास, कुभदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास) के निकट सम्पर्क मे रहा।

जरत्कारु वश के सर्प की कहानी का अध्ययन करते हुए मैंने नागो के अष्ट वश का ज्ञान प्राप्त किया।

मेरा शासन काल बहुत नियमित रहा। अष्ट प्रकृति (राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी—सुमन्त, पडित, मत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक, और प्रतिनिधि) पर पूरा ध्यान देता था। नीति शास्त्र का अध्ययन करते समय मैंने अष्ट प्रकृति (राजा, राष्ट्र, अमात्य, दुर्ग, बल, कोष, सामन्त और प्रजा) के विषय मे गहरी रुचि प्रकट की थी। नीति शास्त्र के अध्ययन के समय मेरा ध्यान अष्टवर्ग (राज्य के अगभूत कृषि, बस्ती, दुर्ग, सेतु, हस्ति-बन्धन, खान कर ग्रहण, तथा सैन्य सस्थापन) की व्यवस्था की ओर भी दिलाया गया था। मेरे अष्ट प्रधान (आठ प्रकार के अगी—प्रधान, अमात्य, सचिव, मत्री, धर्माध्यक्ष, न्यायशास्त्री, वैद्य और सेनापति) बहुत जागरूक थे। अष्ट-

मगल (सिंह, वृष, हाथी, कलश, पखा, वैजयती, भेरी और दीपक—ये मागलिक माने जाते है) का बडा सम्मान होता था।

मेरा आपसे कुछ निवेदन है। आप अष्टावक्र की गीता का अध्ययन कर लाभ उठा सकते है। आपको अष्टावक्र ऋषि के समान आठ जामे से बाहर (हर समय क्रोध मे रहना) नही जाना चाहिए। क्रोधी जीव पर कोई आठ आँसू (विलाप करना) नही बहाता। ऐसे व्यक्ति की आठ पहर चौसठ घडी (हर समय) आठ अठारह होने (हैरान) की सभावना है। आठ गाँठ (कम्मँत चालाक) बनने से सदा आठ सूली पर रहना (हमेशा कष्ट मे रहना) पडता है।

अन्त मे अपने विभिन्न उपनामो की चर्चा कर विषय को समाप्त करता हूँ। अठ, अड, आदि मेरे ही नाम है। अग्रेजी का 'एट' मेरा 'अष्ट' का ही विकृत रूप है। प्राकृत काल मे मुझे अट्ठ कहते थे। मेरी सयुक्त सख्याओ मे अट्ठ, अठ, अड रूप मिलते है—अट्ठाईस, अठासी, अठहत्तर, अडसठ आदि।

नौ

मैं नव अथवा नौ हूँ। नवग्रह (सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु) का पूजन कर मैं नव दुर्गा (दुर्गा के नव विग्रह—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघटा, कूष्माडा, स्कन्द माता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, और सिद्धिदात्री) को अपना शीश झुकाता हूँ। नवकुमारी (नवरात्र मे पूजी जाने वाली नव कुमारियाँ—कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चडिका, शाभवी, दुर्गा और सुभद्रा) का मैं श्रद्धापूवक स्मरण करता हूँ। नवशक्ति (शक्ति के नव विग्रह—प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नदिनी, सुप्रभा, विजया और सवसिद्धिदा) का मै ध्यान करता हूँ। अन्त मे मैनवव्यूह (विष्णु) से अपनी आत्मकथा पूर्ति की कामना करता हूँ।

नवद्वीप (बगाल का एक प्राचीन विद्या केन्द्र, नदिया) मे नवरात्र (चैत्र और आश्विन मे शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन जिसमे दुर्गा की विशिष्ट पूजा की जाती है) की नवमी को मेरा जन्म हुआ। उस समय मेरी माता ने नवधातु (स्वर्ण, रजत, अशोधित लोहा, सीसा, ताबा, रागा, तीक्ष्णक, काँसा, कान्त लोहा—शब्द चिन्तामणि) का दान दिया। मुझे प्राप्त कर वह इतनी प्रसन्न हुई कि मानो उसे कुवेर की नवनिधि– पद्म, महापद्म, शख, मकर, कच्छप,

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	नौ
पंजाबी	नौ
उर्दू	नौ
कश्मीरी	नव
सिंधी	नव
मराठी	नऊ
गुजराती	नव
बंगला	नय/नाय्
असमिया	न/ना
उडिया	न/ना
तेलुगु	तोम्मिदि
तमिल	ओम्बदु
मलयालम	ओम्पतु/ओम्बदु
कन्नड़	ओंबतु
संस्कृत	नव
अंग्रेज़ी	नाइन

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
3	IIII	IX	····	▼▼▼ ▼▼▼ ▼▼▼

मुकुद, कुद, नील और खर्व) प्राप्त हो गई हो। मेरी माता ने मुझ पर नवरत्न (मोती, मानिक, वैदूर्य, गोमेद, हीरा, मूंगा, पद्मराग, पन्ना और नीलम) वार दिए। नव पत्रिका (बेल, अशोक, केला, अनार, धान्य, हल्दी, मानक, अरुइ, और जयती) के जल मे मेरा स्नान कराया गया। नवशायक (नौ जातियां—ग्वाला, तेली, माली, जुलाहा, हलवाई, बढई, कुम्हार, कमकर—कहार, और नाई) को वस्त्र, अन्न आदि का दान दिया गया। नवे दिन मेरी माता ने नवशत श्रृगार कर (सोलह श्रृगार—उबटन लगाना, स्नान करना, वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, अजन लगाना, सिंदूर भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक लगाना, ठोडी पर तिल बनाना, मेहदी रचाना, सुगधित द्रव्यो का प्रयोग, अलकार धारण करना, पुष्पहार पहनना, पान खाना, ओठ रगना, और मिस्सी लगाना) विप्रो को भोजन कराया।

नव वर्ष की अवस्था मे साहित्य के नव रस (श्रृगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त) का अध्ययन किया। राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्न (धन्वन्तरी, क्षपणक, अमर सिंह, शकु, बेताल भट्ट, घटखर्पर कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि) की विधाओं का अन्वेषण किया।

तदनन्तर नवधा भक्ति (नौ प्रकार से की जाने वाली भक्ति—श्रवण, कीतन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन) का आश्रय ले विभिन्न देवी देवताओ से इष्ट प्राप्त किए।

मेरा राज्य नवखड (पृथ्वी के नौ विभाग—भारत,

इलाव्रत, किंपुरुष-मद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश) पर था। अपराधियो को नव विष (नौ प्रकार के विष—वत्सनाम, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगक, कालकूट, हलाहल, और ब्रह्मपुत्र) पान करने पडते थे। व्यवहार मे नौ-दसी (साल भर मे ९ के बदले १० या दसे लेना) का प्रयोग होता था। नौसरिया (चालबाज) केवल शब्द-कोश मे मिलता था। शत्रु सम्मुख आने से पूर्व नौ दो ग्यारह (चपत होना) हो जाता था।

नो, नौ, नह, नू, नवि, नवी, नव आदि मेरे अनेक नाम है। अंग्रेजी का 'नाइन' मेरा ही विकृत रूप है प्राकृत काल मे मैं 'नअ' कहलाया। मेरी सयुक्त सख्याएँ दस मे एक 'उन' करके बनाई जाती है—उनतालीस, उनचास आदि। नवासी और निनानवे मे मेरा वास्तविक रूप विद्यमान रहता है।

शून्य

मैं शून्य हूँ। मेरे कई नाम है। मुझे सीफर भी कहते है। कुछ लोग मुझे बिन्दी या बिन्दु भी कहते हैं। जीरो भी मेरा ही नाम है। लेटिन भाषा मे मुझे 'जेफीरम' कहते हे। इटली मे मुझे 'जमीरो' कहते हे।

मेरी जन्म भूमि भारत हे। भारत के गणितज्ञ के मस्तिष्क से ही मेरा जन्म हुआ। मेरी प्रसिद्धि अरब देशो मे पहुँची। उन्होने मुझे अपनाया। अरब से मेरी यात्रा यूरोप के देशो तक हुई। वे भी मुझे पाकर धन्य हो गए।

भले ही मैं शून्य हूँ, कुछ नही होते हुए भी मेरी सत्ता है। सारा शून्य पथ (आकाश) मेरा निवास स्थान है। शून्य मध्य (नरकट) से मेरी कहानी कोई शून्य हृदय (खुले दिल वाला) व्यक्ति ही लिख सकता है। शून्य दृष्टि (लक्ष्यहीन) मेरी महत्ता को क्या जाने। शून्य हस्त (जिसका हाथ खाली हो) भी मेरी महत्ता नही समझ स

मेरे नाम पर शून्यवाद (बौ चला।
शून्यवादी (बौद्ध) आज भी अनेक दे
अपने धर्म का प्रचार रहे हैं।

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	शून्य
पंजाबी	सिफर
उर्दू	सिफ्र
कश्मीरी	सिफर
सिंधी	बुडी
मराठी	शून्य
गुजराती	मींडुं
असमिया	शून्य
तेलुगु	सुन्न
तमिल	पूज्यम./सैफर
मलयालम	पूज्यं
कन्नड	सोन्नें
संस्कृत	शून्य
अंग्रेज़ी	ज़ीरो

कभी भी शून्य वहरी रोग (जिसमे शरीर का कोई भाग शून्य हो जाता है) से पीडित नही होगे।

आप मेरी वात को शून्यमना (मन को दूसरी ओर लगाना) न हो कर ध्यान से सुन रहे होगे।

गणित के क्षेत्र मे मेरे महत्त्व को कौन भुला सकता है। जिस समय तक मेरा गणित के क्षेत्र मे पदार्पण नही हुआ था उस समय तक केवल नौ सख्याएँ रही। मेरे प्रवेश से अकगणित का इतिहास ही वदल गया। जिस अक के साथ मैं जुड जाती हूँ वह दस गुणा हो जाता है। आप 1, 2, 3, 4, 5 आदि के साथ मुझे दाईं ओर लगा कर तो देखिए।

आप किसी अक मे मुझे जोडिए। आप पाएँगे कि उसमे कोई अन्तर नही पडता। आप किसी सख्या मे से मुझे घटाइए, कुछ अन्तर नही पडेगा। किन्तु आप मुझसे किसी अक को गुणा कीजिए। मै सभी सख्याओ को अपने परिवार का वना दूँगी यानी सभी सख्याएँ शून्य बन जाएँगी।

मै अपनी छोटी सी कहानी सुनाकर अव शून्यालय (एकान्त स्थान) मे विश्राम करने जा रही हूँ।

दस

एक और शून्य के स्नेहपूर्ण दाम्पत्य से उत्पन्न उन्ही का आत्मज मैं दस हूँ। शिव के समान मेरी आधी आकृति स्त्री और आधी आकृति पुरुष की है। मैं ही प्रकृति और पुरुष का अवतार हूँ।

दशबाहू (शिव) तथा दशरूपभृत (विष्णु) को मेरा प्रणाम। दस भुजो (दुर्गा) को मेरी वन्दना। दशरश्मिशत (सूय) तथा दशवाजी (चन्द्र) को मैं शीश झुकाता हूँ। दश-दिक्पाल, [दस दिशाओ के रक्षक देवता—इन्द्र (पूव), अग्नि (अग्निकोण), यम (दक्षिण), नैऋ॑त (नैऋ॑त कोण), वरुण (पश्चिम), मरुत् (वायु कोण), कुवेर (उत्तर), ईश (ईशान कोण), ब्रह्म (ऊर्ध्व दिशा) और अनत (अधोदिशा) की मैं आराधना करता हूँ। मै दशरथ सुत (राम) से अपनी आत्म-कथा पूर्ति की प्रार्थना करता हूँ।

दशहरा (ज्येष्ठ शुक्ल मे दशमी जिस दिन गगा का जन्म हुआ था और सेतु वन्ध मे राम ने रामेश्वर की स्थापना की थी) के दिन मेरा जन्म हुआ। दश मास्य (जो दस महीने तक पेट मे रहे) होने के कारण मेरा नाम 'दस' पडा। जन्म घुट्टी मे दशमूल (दस पेडो की जड या छाल—सरिवन, पिठवन, छोटी कटाई, वडी कटाई, गोखरु, वेल, सोनापाठा, गभारी, गनियारी ओर पाठा) का काढा पिलाया गया।

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	दस
पंजाबी	दस/दह
उर्दू	दस
कश्मीरी	दह
सिंधी	दह/डह
मराठी	दहा
गुजराती	दस
बंगला	दश/दाश
असमिया	दह/डाह
उड़िया	दास्‍ा
तेलुगु	पदि
तमिल	पत्तु
मलयालम	पत्तु
कन्नड़	हत्तु
संस्कृत	दश
अंग्रेज़ी	टैन

ब्राह्मी	चीनी	रोमन
∝	—	X

दशकुल वृक्ष (तंत्र मे गृहीत दस वृक्ष—लसोडा, करज, बेल, पीपल, कदम्ब, नीम, बरगद, गूलर, आँवला और इमली) की छाल के पानी मे मेरा स्नान कराया गया।

हवन की दशाग सामग्री (गुग्गल, चदन, जटामासी, शिलारस, लोबान, राल, खस, नख, भीमसेनी कपूर तथा कस्तूरी) से दशरात्र यज्ञ (दस रात तक चलने वाला यज्ञ) कराया गया। ज्योतिपी ने मेरी दशा (जीवन की काल कृत विशेप अवस्था—गर्भवास, जन्म, बाल्य, कौमार, पौगड, यौवन, स्थावीर्य, जरा, प्राणरोध और नाश) पर विचार किया। उसने उसी समय कह दिया था कि अब अक परिवार की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होती चली जाएगी। अक परिवार अब देश काल की सीमा मे नही बाँधा जा सकेगा।

वास्तव मे हुआ भी ऐसा ही। आज अक परिवार का विस्तार विश्व के कोने-कोने मे हो चुका है। इसके परिवार की सहायता के बिना ससार के कामकाज रुक जाएँ। अब आप अक परिवार रहित ससार की कल्पना भी नही कर सकते।

□□

भाषा	उच्चारण
हिन्दी	दस
पंजाबी	दस/दह
उर्दू	दस
कश्मीरी	दह
सिंधी	दह/डह
मराठी	दहा
गुजराती	दस
बंगला	दश/दाश
असमिया	दह/डाह
उड़िया	दास
तेलुगु	पदि
तमिल	पत्तु
मलयालम	पत्तु
कन्नड़	हत्तु
संस्कृत	दश
अंग्रेज़ी	टैन

ब्राह्मी	चीनी	रोमन	मयअंक	बेबीलोनी
∝∝	—	x	=	<

दशकुल वृक्ष (तत्र मे गृहीत दस वृक्ष—लसोडा, करज, बेल, पीपल, कदम्ब, नीम, बरगद, गूलर, आँवला और इमली) की छाल के पानी मे मेरा स्नान कराया गया।

हवन की दशाग सामग्री (गुग्गल, चदन, जटामासी, शिलारस, लोबान, राल, खस, नख, भीमसेनी कपूर तथा कस्तूरी) से दशरात्र यज्ञ (दस रात तक चलने वाला यज्ञ) कराया गया। ज्योतिषी ने मेरी दशा (जीवन की काल कृत विशेष अवस्था—गर्भवास, जन्म, बाल्य, कौमार, पौगड, यौवन, स्थावीर्य, जरा, प्राणरोध और नाश) पर विचार किया। उसने उसी समय कह दिया था कि अब अक परिवार की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होती चली जाएगी। अक परिवार अब देश काल की सीमा मे नही बाँधा जा सकेगा।

वास्तव मे हुआ भी ऐसा ही। आज अक परिवार का विस्तार विश्व के कोने-कोने मे हो चुका है। इसके परिवार की सहायता के बिना ससार के कामकाज रुक जाएँ। अब आप अक परिवार रहित ससार की कल्पना भी नही कर सकते।

□□